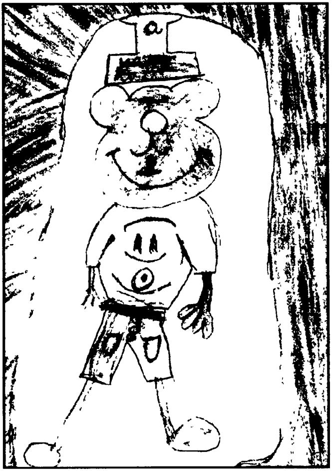


● टीना मिश्रा, चौथी, भोपाल, म.प्र.



● शुभोरूप विस्वास, छह वर्ष, नई दिल्ली



● प्रमोद मालवीय, बैराखेड़ी, म.प्र.

एकलव्य का प्रकाशन

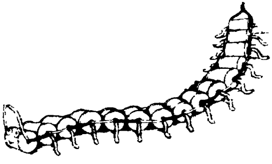
चकमक

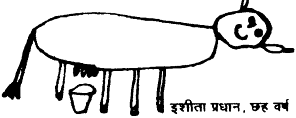
बाल विज्ञान पत्रिका

के 188-189 वें अंक में









इशीता प्रधान, छह वर्ष

आवरण *वाइल्ड लाइफ* की *द ब्यूटी ऑफ इनीमल्स* से साभार

एकलव्य एक स्वैच्छिक सस्था है जो शिक्षा, जनविज्ञान एव अन्य क्षेत्रों मे कार्यरत है। चकमक, एकलव्य द्वारा प्रकाशित अव्यावसायिक पत्रिका है। चकमक का उद्देश्य बच्चो की स्वाभाविक अभिव्यक्ति, कल्पनाशीलता, कौशल और सोच को स्थानीय परिवेश मे विकसित करना है।

इस बार की बात . . .

यह मई और जून दोनों महीनों का इकट्ठा अंक है। पिछले कुछ महीनों से चकमक देरी से तुम तक पहुँचती रही है। हमारी लगातार कोशिश के बाद भी कुछ कारणों से उसे समय पर नहीं पहुँचा पा रहे थे। इसीलिए मई और जून माह के अंकों को मिलाकर एक सयुक्तांक तुम तक पहुँचा रहे हैं। इस उम्मीद से कि आगे चकमक समय पर पहुँचा सकेंगे।

इस अंक में हर बार की तरह खेल-गतिविधि, पढ़ने-करने की सामग्री है। साथ ही श्री आर. के. नारायण के एक उपन्यास ''स्वामी और उसके दोस्त'' का एक भाग भी है। श्री आर. के. नारायण अब हमारे बीच नहीं रहे लेकिन उनका लिखा हमारे साथ है। उन्होंने बच्चों और बड़ों सभी के लिए लिखा, जो हमेशा पसन्द किया गया है। उन्हें चकमक की ओर से विनम्र श्रद्धांजलि देते हैं।

हमारे आसपास जो कुछ होता रहता है उसके बारे में तुम कुछ सोचते होगे, तुम्हारी अपनी कोई राय होगी। इस बार से हम कोशिश कर रहे हैं कि *तुम्हारी राय* जानें। समाज में घटने वाली ऐसी कई घटनाएँ हैं जिनको तुम देखते हो, जिनमें तुम शामिल होते हो। और फिर इन घटनाओं का असर सभी पर पड़ता है, तुम पर भी। तो इस पर तुम्हारी राय **भी** तो होनी चाहिए। तुम हमें लिखकर भेजोगे तो हम चकमक में छापकर तुम्हारी राय और लोगों तक पहुँचाएँगे। इस बार चुनाव और सरकार के बारे में।

एक बात और, जून के अंक के साथ ही चकमक के 16 साल पूरे हो जाएँगे। अब तक छपती रही सामग्री में थोड़े-बहुत फेर-बदल होते रहे हैं। तुम किस तरह के बदलाव चाहते हो, इस पर भी तुम्हारी राय का स्वागत है। ज़रूर लिखना।

● चकमक

चकमक
मासिक बाल विज्ञान पत्रिका
वर्ष-16 अक-11-12
मई-जून 2001

सम्पादन
विनोद रायना
राजेश उत्साही
कविता सुरेश
टुलटुल विश्वास

विज्ञान परामर्श
सुशील जोशी

वितरण
कमल सिह
मनोज निगम
अशोक रोकडे

सहयोग
राकेश खत्री
सुशील शुक्ल

पत्र/चंदा/रचना भेजने का पता

एकलव्य
ई-7/एच. आई. जी.-453
अरेरा कॉलोनी,
भोपाल - 462 016
(म. प्र.)
फोन : 463380

कवर का काग़ज : यूनीसेफ के सौजन्य से

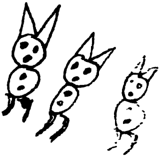
चंदे की दरें

एक प्रति	10.00 रुपए
छमाही	50 00 रुपए
वार्षिक	100 00 रुपए
दो साल	180 00 रुपए
तीन साल	250 00 रुपए
आजीवन	1000.00 रुपए

सभी में डाक ख़र्च हमारा

चदा, मनीआर्डर/ड्रॉफ्ट/चेक से एकलव्य के नाम पर भेजें। भोपाल से बाहर के चेक मे बैक चार्ज 15 00 रुपए अतिरिक्त जोडे।

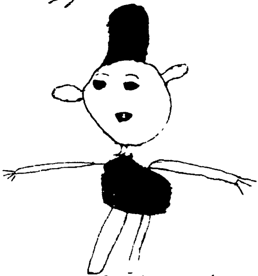
बिल्ली के बच्चे



एक दिन मेरे घर एक बिल्ली अपने तीन छोटे-छोटे बच्चे लेकर आई। बिल्ली और उसके बच्चे काफी दिनो तक मेरे घर बने रहे। वे बच्चे मुझे बहुत अच्छे लगने लगे। एक दिन बिल्ली अपने बच्चो का मेरे घर छोडकर चली गई। जब मै सोकर सुबह उठती, वे मेरे पीछे म्याऊँ-म्याऊँ करने लगते। फिर मै उन्हे दूध-रोटी खिलाती। वो मेरे साथ बहुत खेलते।

एक दिन तीनो बच्चे मेरे घर से बाहर चले गए। और एक बच्चे को एक जीप का धक्का लगा, और वह वही खत्म हो गया। मुझे बुरा लगा और मै रो पडी। उन दो बच्चो को भी बहुत बुरा लगा वे उदास-उदास से रहने लगे। अब बहुत दिन हो गए। अब वे दोनो बच्चे धीरे-धीरे खेलने लगे।

● **शिल्पी तिवारी, सातवी, मडदेवरा, छतरपुर, म प्र**



● **नीरज ओझा, सात वर्ष, लखनऊ, उ प्र**

हमारे शहर में उर्स

हमारे धार शहर मै रमजान के पहले उर्स लगता है। उर्स मे कई तरह की चीजे हमे देखने को मिलती है। उर्स शुरू होते ही पॉच दिनो तक मस्जिद मे कव्वालियॉ चलती है। जिसे लोग बहुत ही पसद करते है। यहॉ का मेला भी सभी पसद करते है। मेले मे बहुत चीजो की दुकाने लगती है। कई दुकाने दूसरे शहर से आती है। और कुछ दुकाने हमारे धार शहर की रहती है। उर्स मे जलेबी, गुलाब जामुन आदि कई तरह की पकवानों की दुकाने भी लगती है।

उर्स के पहले ठण्ड बहुत ज्यादा पडती है। इसलिए हम लोग उर्स से स्वेटर खरीदते है। उर्स मे कई तरह के झूले बाहर शहर से आते है। खूब लोग झूला झूलते हैं। उर्स पद्रह दिन के लिए लगता है।

उर्स देखने हम रात को ही जाते है। उर्स मे रात को बहुत अच्छा लगता है। एक दिन हम रात को उर्स मे गए तो हमे हमारी सहेली मीता मिली। वह भी हमारे साथ उर्स मे घूमती रही।

बहुत दूर-दूर से लोग हमारे शहर मे उर्स देखने आते है। उर्स मे कई सुन्दर वस्तुऍ आती है। उनसे हमारा मनोरजन होता है। इस उर्स मे हमे कुछ अच्छी बाते भी देखने को मिलती है।

हमारे धार शहर के उर्स मे लडाई न हो इसलिए पुलिस बाहर गॉव से बुलाई जाती है। उर्स लगने पर यहॉ के लोगो को बहुत ही अच्छा लगता है। इसलिए हम अल्ला से दुआ करते है कि इस तरह का उर्स हमेशा हमारे शहर मे लगता रहे।

● **सोनलता, दीपा, आरती, प्रेमलता और श्वेता, आठवीं, धार, म. प्र.**

मेरा पन्ना

भूकम्प त्रासदी

आया आया भूकम्प आया
साथ में मातम का माहौल लाया
बना गया सुन्दर शहर को मलबे का ढेर
बस छोड़ गया लाशों का ढेर
ऐसी त्रासदी लेकर आया
आया भूकम्प आया

डरे सहमे हैं लोग अभी भी
ना जाने कब आ जाए भूकम्प
भुज, अजार, कच्छ हुए हैं नष्ट
सह रहे है सब कष्ट
रह रहे हैं सब साथ साथ
भूल गए सब जात-पात
सड़कों पर गुज़ार रहे रात
ऐसी त्रासदी लेकर आया
आया, आया भूकम्प आया

● रितु दीक्षित, उज्जैन, म प्र

जब धरती काँपी

मैं तो एक छोटी-सी चिड़िया,
रहती थी 'भुज' में बढ़िया।

मेरे प्यारे बच्चे थे चार,
उनको करती थी मैं बेहद प्यार।

एक दिन सवेरे हवा चली,
जन गण मन की आवाज सुनी।

इतने में धरती काँपी चारों ओर
मेरे बच्चे गिरे धरती की ओर।

क्या हो रहा था कुछ न जाना,
मैं गिरा हूँ, भूरा पर यह पहचाना।

भगवान क्यों बचाई मेरी जान
किसी और को दे दो यह जान।

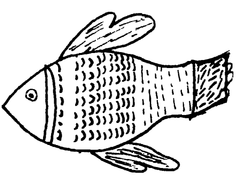
धरती माँ, अब कभी न काँपना ऐसे
कसम तुमको, हम सब की, बस।

● आरोही देवकाली, फरीदाबाद, उ प्र

तरबूज

गर्मी की छुट्टी मे खेत मे तरबूज हम बोते है। मेरी सहेली मेरे घर आती है और तरबूज खाती है। बडा अच्छा लगता है। गर्मी की तपन और हम ठण्डे तरबूज खाते है। एक बार मेरी काकाजी की लडकी रिंकू मेरे घर आई तरबूज खाने। तरबूज रोज खाती। उसने मुझसे कहा कि मै गर्मी की छुट्टी मे आऊँगी और तरबूज खाऊँगी। इस साल हमारे यहाँ वर्षा बिल्कुल भी नही हुई, इसलिए हम तरबूज नही लगाएँगे। हमारे कुएँ मे पानी बहुत कम है।

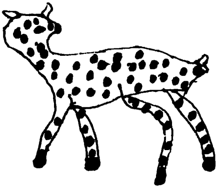
● प्रतिभा पिंटू राठौर, आठवीं, हरदा, म. प्र.



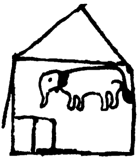
●नाम पता नहीं लिखा



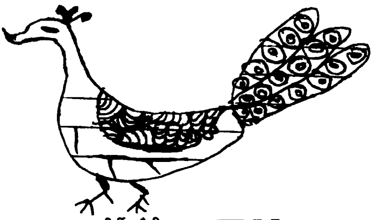
● गुरप्रीत, दूसरी,
देहरादून, उत्तराखण्ड



● फिरोज पठान, पाँचवीं, सतवास, देवास, म. प्र.



● शान्तनु गुहा, पाँच वर्ष, देवास, म. प्र.



● कीर्ती, चौथी, चारुआ, हरदा, म. प्र.



● प्रीती प्रजापति, चौथी, मड़देवरा, छतरपुर, म. प्र.

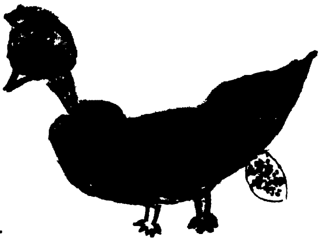


मेरा पन्ना

नाले की बदबू

हमारे घर के पिछवाड़े एक नाला है। जिसमें शहर का गंदा पानी बहता है। हम हमारे किचिन की खिड़की खोलते हैं तो बदबू आती है, मच्छर आते हैं। हम गर्मी में हमारे छत पर सो नहीं सकते। नाले के पास बहुत से झाड़ और गन्दगी भी बहुत है, जिससे हमें बहुत नुकसान होता है। नाले में सूअर घूमते रहते हैं जो सारी गन्दगी सड़क पर फैला देते हैं। छोटे बच्चे जब सड़क पर खेलते है तो वे बीमार पड़ते रहते हैं। इस नाले की सफाई नहीं होने से हम बहुत परेशान है। नगर पालिका इस नाले की कभी भी सफाई नहीं करवाती है। हम अपना घर कोई दूसरी जगह तो नहीं ले जा सकते। नाले में दलदल है जिसमें एक गाय मरते-मरते बची।

● मयंक चौहान, पाँचवीं, खरगोन, म.प्र



● बंसीलाल, दूसरी, उदयपुर, राजस्थान



समीर, तीसरी, संतनगर, सिरसा, हरियाणा

प्यारी कोयल

प्यारी कोयल नीचे आओ
पास बैठकर गीत सुनाओ

मुझको मीठा गीत सुनाना
मीठे फल तुम मुझसे पाना।

कोयल बोली आ न सकूँगी
पास तुम्हारे गा न सकूँगी

ले जाओगे तुम मुझे पकड़कर
रख दोगे पिंजड़े के भीतर

संग तुम्हारे मैं न रहूँगी
आसमान में उड़ती फिरूँगी।

● आदित्य तुंगार, पहली, जबलपुर, म. प्र.

मेरा पन्ना

दिवाली की रात

एक बार की बात है। हम लोग नानी के यहाँ दिवाली में कुलियाँ छोड़ रहे थे। एक बड़ी-सी कुलियाँ मेरी दीदी ने छोड़ी। वो कुलियाँ उलट गई। वह पूरे आँगन में छितर गई। उससे गेहूँ का बोरा फट गया। उससे कागज़ का बोरा भी फट गया। उस कागज़ के बोरे से आग निकलने लगी। उसे दीदी ने हाथ से बुझाई। दीदी का हाथ जल गया। तुरन्त पापा जी आए। फिर पापा जी ने आग बुझाई। उनका भी हाथ जल गया। फिर मम्मी जी ने उसे पानी से बुझाया। उनका हाथ नहीं जला। मम्मी जी बुझा रही थी पर हम लोग की सिट्टी-पिट्टी गुम थी। पापा जी बोल रहे थे, किसने छोड़ा-किसने छोड़ा? पर हम बतलाते कैसे। क्योंकि दीदी भी मार खाती और हम भी मार खाते।

● सविता, पहली, बनौली, दरभंगा, बिहार



● भारती साहू, सातवीं,
भोपाल, म. प्र.

बंदर की प्रेम कथा

मैं रामू हूँ। मैं एक बन्दर हूँ। मेरी एक बन्दरिया भी है। मेरा मालिक हमें बहुत मारता था। मुझे मारता ही था, मगर मेरी बन्दरिया जिसका नाम पिंकी है, उसे भी बहुत मारता था। जब कभी मैं सलाम करना भूल जाता तो वह मुझे बहुत मारता था। वह मुझे इसलिए मारता था क्योंकि वह मुझे सोने के अण्डे वाली मुर्गी समझता था। हमने उससे परेशान होकर भागने का सोचा। लेकिन उसने पिंकी को पकड़ लिया। फिर मुझे आधे रास्ते से वापस आना पड़ा। आते ही हमें बहुत मार पड़ी। लेकिन हमने हार नहीं मानी, और दूसरे दिन हम भाग निकले।

भागने के बाद हम कभी इस पेड़ तो कभी उस पेड़ घूमते रहे। एक दिन हम एक छत से दूसरी छत पर जा रहे थे, उसी समय पिंकी गिर पड़ी और मर गई। मैं चिल्लाया, पिंकी...पिंकी। लेकिन वह मर चुकी थी। फिर मैं उदास घूमता रहा। लोग मुझे डण्डे से और पत्थर से मारते थे। एक दिन मैंने एक आदमी को काट लिया। मैंने सोचा कि जो लोग मुझे मारेंगे मैं उनको काट लूँगा। शायद मुझे लोग चिड़ियाघर भेज दें। वहाँ मुझे दोस्त भाई-बन्धु मिल जाएँगे। जैसा मैंने सोचा वैसा ही हुआ। जब मैं चिड़ियाघर पहुँचा, मैंने पिंकी को देखा और मैं उछल पड़ा। मैंने पिंकी से पूछा, "अरे, पिंकी तू तो मर गई थी?" पिंकी बोली, "मैं मरी नहीं थी, बस बेहोश हुई थी और लोगों ने मुझे उठाकर यहाँ भेज दिया।" मैं खी-खी करने लगा और पिंकी प्यार से मेरे जूं खोजने लगी।

● प्रतिभा मिश्र, छठवीं, दिल्ली

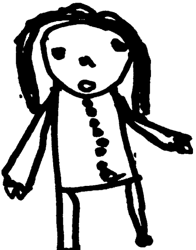
मेरा छोटा भैया



● रीता चौधरी, उज्जैन,

जल्दी सोता,
सुबह देर से उठता है।
मुँह तक अच्छे से धोता नहीं।
कभी-कभी नहाने से भी डरता है।
धूल मिट्टी में लोटता,
कपड़े गंदे करता है।
अपने छोटे-छोटे पैरों से
घर भर गन्दा करता है।
खेल में बेईमानी करे
हारने पर रोता है।
दोस्तों से झगड़ता है।
सबको हैरान करता है
पापा के ड्यूटी जाने पर
मम्मी को खूब सताता है।
आफिस की फाइलों पर
कभी चित्र सा बनाता है।
लिखने को पेन पेंसिल,
दे दो तो उनको खोता है।

खुद ही चीज़े फेंक-फाँक कर
न मिलने पर रोता है।
स्कूल समय पर नहीं जाता,
न पढ़ने में ध्यान लगाता है
गृह कार्य कभी न करता,
कक्षा में सबसे पीछे बैठता है।
मेरी चोटी खींच जोर से
मुझे खूब रुलाता है।
मम्मी-पापा चिल्लाऊँ तो,
इधर-उधर भाग जाता है
पीछे जब दौड़ो उसके तो
दूर से मुझे मुँह से चिढ़ाता है।
थक हारकर रूठूँ तब मैं,
पास चला आता है।
झूठ-मूठ न बात करूँ तो
मुझको खूब मनाता है,
लाख बुराई हो तो फिर भी,
मेरे मन को भाता है।



● रूपा थापा, छह वर्ष, इटालीन, अरुणाचल प्रदेश

● शक्ति पटेल, पांढुतला, बालाघाट, म. प्र.



बिल्ली और चूहा

एक थी बिल्ली।
एक था चूहा।
दोनों में हो गई लड़ाई।
चूहा रोया, बिल्ली रोई।

फिर वे बोले,
'देखो भाई!
अब हम दोनों,
दोस्त बनेंगे,
आपस में फिर
नहीं लड़ेंगे।'

● दीप्ति महराणा, पहली, जबलपुर, म.प्र.

हम पिकनिक गए

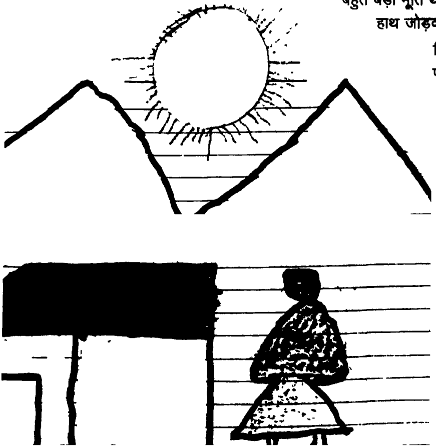
हम विद्यासागर स्कूल इन्दौर में पढ़ते हैं। 21 नवम्बर को हम पिकनिक के लिए गोमटगिरि गए थे।

हमने बस में बहुत गाने गाए जैसे लकड़ी की काठी, कहो न प्यार है और दुल्हन हम ले जाएँगे।

गोमटगिरि पहुँचकर हम सब बहुत खेले क्योंकि वहाँ बड़े पेड़ों पर रस्सियाँ लटकी थीं। हम उन पर लटककर झूल रहे थे। कुछ बच्चों को लटकने में डर लग रहा था। क्योंकि ऊपर पेड़ पर बन्दर थे। हम दौड़-दौड़कर थक गए तो हमारी टीचर ने कहा कि अब अपने जूते उतारकर और हाथ-मुँह धोकर लाईन बनाओ, हम मंदिर चलेंगे। वहाँ भगवान महावीर की बहुत बड़ी मूर्ति थी और घण्टी भी थी, हम सबने हाथ जोड़कर प्रार्थना की।

फिर हम सबने खाना खाया। पहले नर्सरी के बच्चों ने, फिर के.जी.–1 के बच्चों ने। हमने खाने में चपाती, पुलाव, गोभी की सब्जी और रसगुल्ले खाए थे। बाद मे हमने जूते-मोजे पहने और अपना-अपना सामान लेकर बस में बैठ गए, और वापस स्कूल के लिए चल पड़े। लौटते समय बस में कुछ बच्चे, जो थक गए थे, वो सो गए। जब हम स्कूल पहुँचे तो सभी लोग हमारा इंतजार कर रहे थे क्योंकि स्कूल की छुट्टी हो गई थी। फिर हम बस में बैठकर अपने घर आ गए।

● समर्थ और साकार अग्रवाल, इन्दौर, म.प्र.



● अविकल शर्मा, तीसरी, धुमका, राजनांदगाँव, छत्तीसगढ़



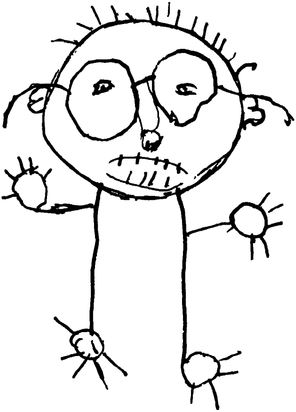
मेरा पन्ना

दुर्घटना

एक दिन मैं साइकिल लेकर जा रहा था तो मेरी मम्मी ने मुझसे कहा, 'बेटा साइकिल मत ले जा।'

लेकिन मैं नहीं माना और मैं साइकिल ले गया। तो मैं बस स्टैंड से थोड़ी दूर गया और वहाँ मेरी साइकिल स्लिप मार गई और मैं गिर पड़ा। मेरे सिर में चोट आ गई। मेरी साइकिल का ब्रेक टूट गया। मैं घर आया। मेरी पट्टी हुई। फिर मेरी मम्मी ने मुझे बहुत डाँटा।

● राजेश पटैरिया, मडदेवरा, छतरपुर, म प्र.



● तोषी तिवारी, तीन वर्ष, खिमलासा,

आँखों देखी घटना

मेरा गाँव वैसे तो छोटा है मगर बहुत अच्छा है। मेरे गाँव का नाम गाँववालों ने मड़देवरा रखा। सब खुशहाल रहते हैं। रोड के किनारे पर एक स्कूल है। वहाँ हम सभी बच्चे पढ़ते है।

एक दिन की बात है हमारे गाँव का एक गरीब घराने का छोटा-सा बच्चा सड़क के किनारे घूम रहा था। शाम के 6.00 बजे वाली बस बहुत तेजी से आ रही थी। उस पाँच साल के बच्चे ने ध्यान न देते हुए रोड को पार करना चाहा। तभी बस बच्चे के करीब आ पहुँची। बस के ड्राईवर ने बहुत कन्ट्रोल किया। फिर भी बच्चा बस के चक्के से टकरा गया और रोड पर गिर पड़ा। बस बच्चे के एक पैर पर से निकल गई। उसे देखते ही गाँव वाले उस तरफ दौड़े। ड्राईवर भी लोगों को देखते ही बस की रफ्तार बढ़ाते हुए भाग गया। तब फिर हमारे गाँव के सभी लोगों ने उस बच्चे को अस्पताल पहुँचाया पर उसका परिवार बहुत गरीब था। तो फिर हम सभी बच्चों ने चंदा जोड़कर उस बच्चे की जान बचाने में खूब मदद की। हमारे मास्टर कहते हैं कि बच्चो यही है इन्सानियत। हम सभी बच्चे ईश्वर से प्रार्थना करते हैं कि ऐसी घटना कभी भी न हो।

● सीमा विश्वकर्मा, मड़देवरा, छतरपुर, म. प्र.



मेरा पन्ना

पालतू कुत्ते ने काटा

एक बार की बात है। जब मैं कक्षा छठवीं से सातवीं में भर्ती हुआ तब मुझे अपने गाँव को छोड़कर दूसरे गाँव आना पड़ा। कुछ विशेष समस्याओं के कारण मुझे एक छात्रावास में रहना पड़ा। मैं छात्रावास में पहले पहल भर्ती हुआ। मुझे छात्रावास का अनुभव न था। छात्रावास के अधीक्षक फादर जी ने कुछ पालतू जानवर पाले थे। जैसे – कुत्ता, बिल्ली आदि।

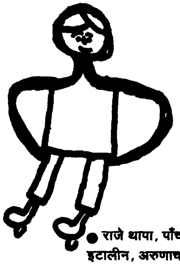
वहाँ का एक बड़ा कुत्ता जो लगभग 3 या 4 वर्ष का होगा। मोटा-ताज़ा खतरनाक तथा आज्ञापालन का उसमें अभाव न था। उसने एक दिन रात्रि में मुझे देखा और मैंने उसको। मैंने उसका बड़ा भारी काला शरीर देखा और डर के मारे दौड़कर भागना चाहा। पर मेरे दौड़ने के तुरन्त ही बाद वह दौड़ा मुझे पकड़ा और काट लिया। पर उतना अधिक न काटा था। पर एक दिन मेरे दोस्त कुलवेन्द्र के साथ भी वही घटना हुई जो कि मेरे साथ हुई थी। कुत्ता उसकी ओर भी झपटा और उसे दाँतों से काटा। पर उसने मेरी अपेक्षा उसे अधिक काटा था। उसका काफी दिनों तक इलाज भी किया गया। फिर उसके बाद हम उस कुत्ते के सामने जाने से भी डरते हैं। कभी चले भी गए तो उसके सामने आते ही दौडकर भाग जाते हैं।

● **सजेश कुमार पटैल, पांडूतला, बालाघाट**

बैल ने माफी माँगी

एक दिन की बात है मैं और मेरा भाई बाज़ार जा रहे थे। अचानक उसे पीछे से एक बैल ने सींग मार दिया। उसे बहुत गहरी चोट लगी थी। मैंने तुरन्त पापा-मम्मी को खबर दी। मेरे मम्मी-पापा दूसरा भाई अकरम और हमारे पड़ोस की आंटी की मदद से मेरे भाई को अस्पताल ले जाया गया। अस्पताल में भर्ती किया गया। कुछ दिनों बाद मेरे भाई का जख्म सुधर गया। और डॉ. साहब ने छुट्टी दे दी। एक दिन फिर ऐसा हुआ। मैं और मेरा भाई खेल रहे थे, उसी समय वही बैल दूर से आता हुआ दिखाई दिया जिसने मेरे भाई को सींग मारा था। मेरा भाई बहुत डर गया। मैं और मेरा भाई एक ओर खड़े हो गए। जब वह बैल पास में आया तो हम और डर गए। लेकिन वह धीरे से मेरे भाई के पास आया और बैठ गया। उसके आँखों में मुझे आँसू दिखाई दिए। ऐसा लग रहा था जैसे वह मेरे भाई से माफी माँग रहा हो।

● **अजहर खां, बुरहानपुर, खण्डवा, म. प्र.**



● **राजे थापा, पाँच वर्ष, इटालीन, अरुणाचल प्रदेश**

मेरा पन्ना

पहेली बूझो

(1)

सफेद रंग की ज़रा सी हड्डी
घास में खेले यार कबड्डी

(2)

नीचे आग ऊपर पानी
बीच में नाचे गुड़िया रानी

(3)

घर के कोने में बैठी रहती
हरदम जाल बुनती रहती

(4)

खाते हैं सभी कोई स्वाद न बता सका
खिलाते हैं सभी लोग कोई चख न सका

(5)

साथ सभी के आती जाती
हाथ किसी के कभी न आती

● अशोक पटैरिया, मड़देवरा, छतरपुर, म. प्र.

दोस्त ने डराया

एक बार गर्मी के दिन थे। मैं मेरे दोस्त अनिल के घर गया, तो वहाँ राकेश भी बैठा था। अनिल ने कहा कि आज मन नहीं लग रहा है। राकेश बोला, चलो, करोंदी खाने चलें। तो अनिल ने कहा, हाँ चलो। हम सब वहाँ से चल दिए। हम बहुत दूर आ गए तो अनिल ने कहा, यहाँ पेड़ की छाँव में रुक जाएँ। हम वहाँ रुक गए। हम कुछ चकमक के बारे में बात कर रहे थे। वहीं हमारा दोस्त कपिल भी अपने खेत पर जा रहा था। उसने हम को देख लिया, हमने उसको नहीं देखा। उसने सोचा कि इनने मुझे नहीं देखा, मैं इन्हें डराऊँ।

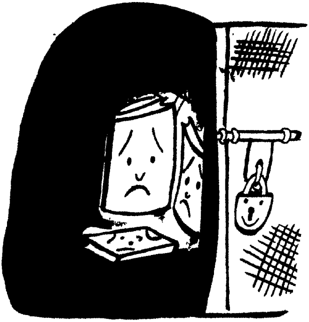
तो उसने अपना चेहरा ऐसा बना लिया कि उसको देखकर कोई पहचान नहीं सके। वह हमारे पास आया तो राकेश ने देख लिया। राकेश जोर से चिल्लाया। अनिल ने भी उसे देख लिया। दोनों हाथ पकड़कर ऐसे भागे तो कपिल बहुत ज़ोर से हँसा। अब तो कपिल की हँसी, अनिल ने पहचान ली और वे कपिल के पास वापस आए और कपिल से कुछ बातचीत की। फिर घर की ओर करोंदी खाते-खाते वापस आए।

● राहुल उपाध्याय, नसरूल्लागंज, सीहोर, म.प्र.



● सरवर, पाँच वर्ष, उदयपुर, राजस्थान

छुट्टी का स्कूल



यहाँ किताबें छिपकर रहतीं
मम्मी पढ़ने को न कहतीं
हरदम खेलकूद का मौसम
रहे खुशी से झूलमझूल

गप्पों का ले मिर्च-मसाला
छुट्टी के पापड़ पर डाला
खाते हुए धूप में दौड़े
लगे बदन पर जैसे फूल



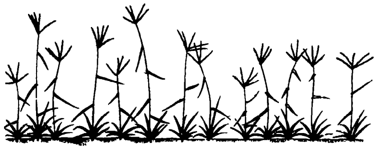
होमवर्क हो गया हवाई
जैसे उसको मिली दवाई
पढ़ने के कमरे की चाबी
रखकर कहीं गए हम भूल
यह है छुट्टी का स्कूल

* देवेन्द्र कुमार, दिल्ली
* चित्र आशीष नगरकर

विशेष

हम घास क्यों नहीं खाते?

सुशील जोशी



सवाल यह भी हो सकता है कि अकल क्या घास चरने गई है? वैसे एक दंतकथा के अनुसार महाराणा प्रताप ने शायद मजबूरी में घास की रोटी खाई थी। दंतकथा की बात छोड़ें, सच्चाई यह है कि हम घास खाकर ज़िन्दा नहीं रह सकते। उससे भी बड़ी सच्चाई तो यह है कि दुनिया में बहुत कम जन्तु ऐसे हैं जो घास-फूस, पत्ती खाकर ज़िन्दा रह पाएँगे। ऐसे बडे जन्तुओं में गाय, भैंस, बकरी, घोडा, गधा, हाथी, खरगोश वगैरह ही हैं। चक्कर क्या है? कुछ जानवर पत्तियाँ खाकर ज़िन्दा रह सकते है मगर अधिकतर जानवर नहीं रह सकते?

दुनिया में सबके लिए भोजन बनाने वाले पेड़-पौधे सबसे ज़्यादा मात्रा में तो पत्तियाँ, तना वगैरह ही उत्पन्न करते हैं। मगर इन्हें खाने-पचाने वाले बहुत कम हैं। कितनी रोचक बात है। सवाल है कि इसका कारण क्या है? हम घास क्यों नहीं पचा सकते?

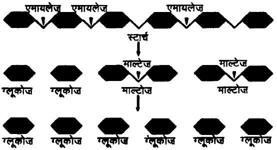
इस सवाल का जवाब हमें जहाँ मिलेगा उसे जीव रसायन शास्त्र कहते हैं।

सबसे पहले तो यह देखा जाए कि किसी चीज़ को पचाना मतलब क्या? जब हम कोई चीज़ खाते हैं तो पहले तो उसे छोटे-छोटे टुकड़ों में तोड़ा-पीसा जाता है। कुछ हद तक यह काम हम चबाकर करते हैं और बाद में हमारा आमाशय इस काम को पूरा करता है।

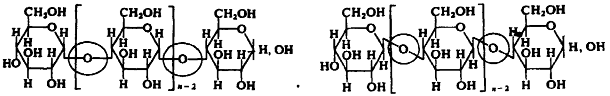
मगर अभी यह भोजन कहने को ही हमारे शरीर मे पहुँचा है। वास्तव में तो यह अभी हमारे शरीर से बाहर ही है। दरअसल मुँह से लेकर गुदा द्वार तक एक नली है जिसे आहार नाल कहते हैं। यह दोनों ओर से खुली है।

इस नली में पडा भोजन हमारे काम नहीं आ सकता। इसे आहार नाल की दीवार से सोखना होगा। मगर भोजन को सोखने से पहले उसमें परिवर्तन जरूरी है। उसे इस रूप में बदलना होगा कि वह हमारी आहार नाल की दीवार को पार कर सके। यह रासायनिक क्रियाओं द्वारा होता है।

जैसे हमारे भोजन का एक प्रमुख हिस्सा मण्ड यानी स्टार्च होता है। स्टार्च हमारी आहार नाल की



मण्ड या स्टार्च को पचाने की विधि: पहले मुँह में मौजूद लार से और अग्न्याशय के पाचक रसों से कुछ मण्ड टूटकर ग्लूकोज बन जाता है पर अधिकतर माल्टोज बनता है। फिर आंत के पाचक रसों में मौजूद माल्टेज की मदद से माल्टोज भी टूटकर ग्लूकोज (शक्कर) में बदल जाता है।



स्टार्च की बनावट और सेल्यूलोज़ का बनावट। सिर्फ एक बंध के फर्क से सारा मामला बदल जाता है। ये बंध गोले में दिखाए गए हैं।

दीवार को पार नहीं कर सकता। पहले स्टार्च को शक्कर में बदला जाता है, फिर इस शक्कर को हमारा शरीर सोख लेता है।

स्टार्च को बदलने का काम हमारी छोटी आँत में होता है। वैसे कुछ हद तक यह काम मुँह में ही शुरू हो जाता है। स्टार्च वैसे ही पड़े-पड़े शक्कर में नहीं बदल जाता। स्टार्च को शक्कर में बदलने के लिए हमारी आँत की दीवार में से कुछ खास रसायनों का आहार नाल में रिसाव होते है। इन्हें एन्ज़ाइम कहते हैं। स्टार्च को शक्कर में बदलने का काम एमायलेज़ नामक एन्ज़ाइम करता है।

इसी प्रकार से भोजन के विभिन्न पदार्थों को शरीर मे सोखे जा सकने वाले पदार्थों में बदलने के लिए अलग-अलग एन्ज़ाइम होते हैं। वास्तव में पाचन ही क्यों, हमारे शरीर में किसी भी रासायनिक क्रिया को करवाने के लिए एन्ज़ाइम की ज़रूरत होती है। यदि किसी क्रिया को करवाने के लिए एन्ज़ाइम नहीं है, तो वह क्रिया नहीं होगी।

हमारे शरीर में तमाम किस्म के एन्ज़ाइम बनते हैं और अनगिनत रासायनिक क्रियाएँ होती हैं। मगर एक क्रिया ऐसी है जिसके लिए एन्ज़ाइम हमारे पास नहीं है। और हमारे पास ही क्यों, किसी भी तथाकथित विकसित बहुकोशिकीय जन्तु के पास नहीं है। हाँ, एक-दो अपवाद ज़रूर हैं। वह क्रिया है सेल्यूलोज़ नामक पदार्थ को शक्कर में बदलने की।

सेल्यूलोज़

पेड़-पौधों की कोशिकाओं और जन्तुओं की कोशिकाओं में एक बड़ा अन्तर यह होता है कि वनस्पति कोशिकाओं की दीवार सेल्यूलोज़ नामक पदार्थ से बनी होती है। दरअसल पेड़-पौधों के कुल वज़न का एक बड़ा हिस्सा सेल्यूलोज़ ही है। इसी से कागज़ बनता है - वह भी सेल्यूलोज़ ही है। घास मूलत: सेल्यूलोज़ ही होता है। और इसे हम पचा नहीं सकते। दरअसल इसे कोई भी विकसित जन्तु नहीं पचा सकता।

सवाल दर सवाल

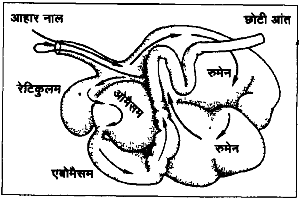
यदि यह मान लें कि एकाध अपवाद को छोड़कर कोई भी विकसित जन्तु सेल्यूलोज़ को नहीं पचा सकता तो सवाल यह उठता है कि गाय, बकरी, भैंस, खरगोश, हाथी कैसे घास-पत्ती पर ज़िन्दा रह पाते हैं। यह सवाल हमें जीव-जन्तुओं में मौजूद एक अनोखे सम्बंध की ओर ले जाता है।

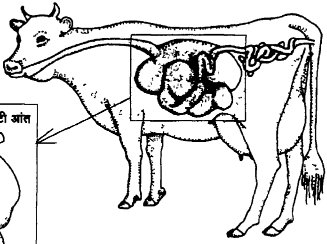
खाए कौन, पचाए कौन

ऊपर जिस अनोखे सम्बंध की बात मैंने की उसमें सूक्ष्मजीव प्रमुख भूमिका निभाते हैं। दरअसल सूक्ष्मजीव अर्थात् बैक्टीरिया (जीवाणु) और प्रोटोज़ोआ ही इस दुनिया में सेल्यूलोज़ को पचाने की कूवत रखते हैं। जो विकसित जन्तु घास, पत्ती, लकड़ी खाकर ज़िन्दा हैं वे इन सूक्ष्मजीवों से प्रेम बनाकर रखते हैं।



गाय के पेट की बनावट





जैसे गाय को ही लें। यह तो तुम जानते ही हो कि गाय वगैरह जन्तु जुगाली करते हैं। इन जुगाली करने वालों का पेट बड़ा विचित्र होता है। इनके पेट (या आमाशय) मे चार भाग होते हैं : रुमेन, रेटिकुलम, ओमैसम और एबोमैसम। जब गाय घास खाती है तो उसे बगैर चबाए रुमेन मे पहुँचा दिया जाता है। रुमेन से यह रेटिकुलम में पहुँचता है। वहाँ इस घास को थोड़ा नरम करके गेंदों का रूप दिया जाता है। रेटिकुलम से इसे वापिस मुँह में पहुँचाया जाता है। अब गाय इसे आराम से चबाती है। इसे जुगाली कहते हैं। जुगाली के समय सेल्यूलोज़ को अच्छा महीन पीस दिया जाता है। अब इसे ओमैसम में पहुँचाया जाता है और वहाँ से एबोमैसम में। रुमेन पेट का वह हिस्सा है जहाँ तमाम सूक्ष्मजीव बसते हैं। हाँ, गाय के पेट मे अनगिनत सूक्ष्मजीव पलते हैं।

गाय के पेट में पाए जाने वाले सूक्ष्मजीव दो तरह के होते है - बैक्टीरिया और प्रोटोज़ोआ। जुगाली करने वाले जानवरों के पेट मे प्रोटोज़ोआ की कम से कम 30 प्रजातियाँ पाई गई हैं। यदि इनके पेट में से 1 ग्राम पदार्थ निकाला जाए तो उसमें 10 लाख सूक्ष्मजीव मिलेंगे। तो यहाँ तीन जीव हैं - गाय, प्रोटोज़ोआ और बैक्टीरिया। और इनके परस्पर सम्बंध काफी जटिल होते है। बैक्टीरिया सेल्यूलोज़ का पाचन करके ग्लूकोज़ बनाते हैं। कभी प्रोटोजोआ जन्तु बैक्टीरिया को खा भी जाते है। इस ग्लूकोज का इस्तेमाल बैक्टीरिया, प्रोटोजोआ और गाय तीनों करते है। कभी-कभी गाय बैक्टीरिया, प्रोटोज़ोआ को भी पचा जाती है प्रोटीन की ज़रूरत पूरी करने के लिए।

गाय में सूक्ष्मजीवों का वास आहार नाल के शुरू में होता है मगर खरगोश में ये सूक्ष्मजीव उसकी आहार नाल के अन्तिम हिस्से को अपना घर बनाकर रहते है। ये वहाँ सेल्यूलोज़ को पचाते है और यह पचा हुआ सेल्यूलोज मल के रूप मे निकल जाता है, खरगोश के किसी काम नहीं आता। तो खरगोश क्या करे? उसने एक विचित्र समाधान यह किया है कि वह अपना मल फिर से खा जाता है। इसे मलभक्षण या कोप्रोफेजी कहते हैं।

दीमक का खेल

अधिकांश दीमकों का भोजन लकडी, सड़ी-गली पत्तियाँ वगैरह हैं जो मुख्यत: सेल्यूलोज़ ही है। दीमक की स्थिति भी जुगाली करने वालों जैसी है। दीमक भी खुद सेल्यूलोज को पचा नहीं सकती। इसलिए उसे भी सूक्ष्मजीवों की मदद लेनी होती है। वैसे दीमकों का



दीमक के पेट की बनावट

भोजन अपने आप में एक कहानी है जो मैं फिर कभी बताऊँगा। अभी तो सेल्यूलोज़ की बात करते हैं।

दीमकों की आंत के पिछले हिस्से में सूक्ष्मजीव पलते हैं। ये इतनी बड़ी संख्या में होते हैं कि कई दीमकों का तो एक तिहाई वज़न इन सूक्ष्मजीवों से बनता है। इसी प्रकार के सूक्ष्मजीव एक लकड़ीभक्षी कॉकरोच में भी पाए जाते हैं। मज़ेदार बात यह है कि जुगाली करने वाले जीवों और दीमकों दोनों में पाए जाने वाले ये सूक्ष्मजीव बिना ऑक्सीजन के ही जी पाते हैं। यदि दीमक को बहुत ज़्यादा ऑक्सीजन वाले वातावरण में रख दिया जाए तो ये सूक्ष्मजीव और साथ में दीमक भी मारी जाती है।

दीमक में पाए जाने वाले सूक्ष्म जीव सेल्यूलोज़ का विघटन करके ग्लूकोज़ नहीं बनाते। वे कार्बन डाई ऑक्साइड और एसीटिक अम्ल बनाते हैं। दीमक इस एसीटिक अम्ल का उपयोग अपने लिए करती है। दीमकों के मामले में एक अन्तर और है - दीमकें कभी भी इन सूक्ष्मजीवों को नहीं पचातीं।

यह भी पता चला है कि दीमकों की आंत में प्रोटोज़ोआ के साथ-साथ बैक्टीरिया भी होते है। ये बैक्टीरिया हवा की नाइट्रोजन को यौगिकों में बदल देते हैं। ठीक उसी तरह जैसे दलहन फसलों की जड़ों पर छोटी-छोटी गठानों में पाए जाने वाले बैक्टीरिया करते हैं।

दीमकें इन सूक्ष्मजीवों पर इस कदर निर्भर हैं कि पैदा होते ही ये प्रौढ़ दीमकों के मल का भक्षण करके अपने आपको सूक्ष्मजीवों से लैस कर लेती हैं।

है ना मज़ेदार सम्बंध! ऐसा नहीं है कि हमारी आंतों में सूक्ष्मजीव नहीं पाए जाते। हमारी आँतों में भी करोड़ों की संख्या में बैक्टीरिया होते हैं। ये कुछ विटामिन बनाते हैं और हमारी ज़रूरत की पूर्ति करते हैं। परन्तु हमें सेल्यूलोज़ पचाने वाले बैक्टीरिया की नेमत नहीं मिली है। यदि मिली होती, तो महाराणा प्रताप की दन्तकथा महत्वहीन होती।


दीमकों के पेट में पाए जाने वाले सेल्युलोज़ पचाने वाले कुछ प्रोटोज़ोआ

इस लेख में आए चित्र इन्वर्टिब्रेट स्ट्रक्चर एंड फंक्शन, बायलॉजिकल साइंस (कीटन), जनरल माइक्रोबायोलॉजी एवं ऑर्गेनिक केमिस्ट्री (फिनार) खण्ड दो से साभार लिए गए हैं।

अपनी प्रयोगशाला

अम्ल और क्षार

अम्ल और क्षार के बारे में तो तुमने सुना ही होगा। पदार्थ के इस गुण को अम्लीयता और क्षारीयता कहते हैं। अम्लीयता और क्षारीयता को पी एच (PH) में नापा जाता है। 7 की पी एच का मतलब उदासीन होता है। 7 से कम पी एच का मतलब अम्लीय और 7 से अधिक का मतलब क्षारीय होता है। किसी क्षारयुक्त पदार्थ के पानी में घोल को क्षारीय कहते हैं। सभी क्षार पानी मे घुलनशील नही होते हैं।

कोई पदार्थ या घोल अम्लीय है या क्षारीय, यह पता लगाने के लिए हम सूचकों का इस्तेमाल करते है। सूचक ऐसे रसायन हैं, जो किसी अन्य के साथ क्रिया करने पर उसे रगीन या रंगहीन बना देते है। उनकी यह क्रिया भी इस बात पर निर्भर करती है कि वे क्षारीय हैं या अम्लीय। सूचकों की सहायता से पी एच को भी नापा जा सकता है।

धातुओं, क्षारों, और कार्बोनेट्स से जब अम्ल क्रिया करते हैं तो लवण पैदा होते है। किसी क्रिया में अम्ल 'खत्म' होने पर वो उदासीन हो जाता है। उदाहरण के लिए कोई भी क्षार अम्ल को उदासीन कर सकता है। परन्तु अगर बहुत ज़्यादा क्षार डाला गया तो घोल उदासीन की बजाए क्षारीय हो जाएगा।

सूचक बनाना

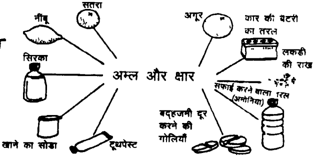


बहुत से लाल, बैगनी, पीले और गुलाबी रंग के फूलों, फलो और पत्तों को सूचक की तरह इस्तेमाल किया जा सकता है। इसके लिए उन्हे पीसकर पानी या रगहीन स्पिरिट मे मिलाना होगा। स्पिरिट पर आधारित सूचक ज़्यादा टिकाऊ होते हैं। उबालने से अच्छा रग आता है।

खोजबीन करो और स्थानीय फूल, पत्तों मे से सबसे अच्छे सूचक तलाशो। खुद बनाए सूचकों की शुद्धता की तुलना, बाजार से खरीदे गए सूचकों – जैसे लिटमस और मिथाइल ऑरेंज से की जा सकती है।

रोज़मर्रा के अम्ल और क्षार

प्रतिदिन हम जो चीजे इस्तेमाल करते हैं उनमे से कई अम्लीय या क्षारीय होती है। यहाँ उसके कुछ उदाहरण दिए गए हैं। इनमे से कुछ चीजों का सूचकों द्वारा परीक्षण करो और मालूम करो कि कौन-सी वस्तुएँ अम्लीय और कौन-सी क्षारीय हैं।

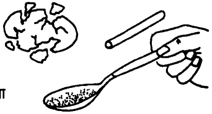


लवण बनाना

अम्ल और कार्बोनेट

आवश्यक सामान – हाईड्रोक्लोरिक अम्ल, चूने का पत्थर, खाने का सोडा, अण्डे के छिलके, सुरक्षा चश्मा।

इन प्रयोगों को करते समय सुरक्षा चश्मा पहनना।

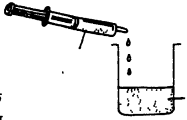


सूची में दिए हरेक पदार्थ में (जो सभी कार्बोनेट हैं) थोड़ा सा हाईड्रोक्लोरिक अम्ल मिलाओ। प्रत्येक बार मिश्रण में बुलबुले उठेंगे और झाग बनेगा (जो क्रिया होना दर्शाएगा) और बाद में घोल एकदम साफ हो जाएगा। हर बार अम्ल, कार्बोनेट के साथ क्रिया करके सोडियम-क्लोराईड, यानी खानेवाला साधारण नमक बनाएगा।



इस क्रिया को एक चम्मच में भी किया जा सकता है। पर चम्मच में करने पर रसायनों की बहुत थोड़ी मात्रा का उपयोग करना।

अम्ल और क्षार



आवश्यक सामान – पोटाश का घोल, सिरका, सूचक, पारदर्शी बर्तन, सुरक्षा चश्मा।

जली हुई लकड़ी की थोडी राख पानी में मिलाओ और उसे छानो। छना हुआ तरल, पोटाश का घोल (पोटेशियम कार्बोनेट) होगा। इसमे इतना सूचक डालो कि घोल का रंग बदल जाए। फिर उसमें धीरे-धीरे सिरका डालो जिससे कि सूचक का रग फिर बदल जाए। पूरी तरह रंग बदलने के लिए अम्ल की उतनी मात्रा चाहिए होगी जो घोल के क्षार को पूरी तरह उदासीन कर दे। अगर अब और अधिक अम्ल डाला गया तो घोल अम्लीय हो जाएगा।



बर्र का डंक

बर्र का डक अम्लीय होता है। डंक के दर्द को ठीक करने के लिए उस पर हल्का क्षारीय घोल लगाया जाता है। क्षार से डक का अम्ल उदासीन हो जाता है।

सुरक्षा चश्मा बनाना

आवश्यक सामान – गत्ता, कपड़ा या फोम – बीच में भरकर, नरम बनाने के लिए। गोंद, सलोटेप, भूरा-चौड़ा चेप, डोरा या धागा। पारदर्शी प्लास्टिक। चश्मे को इस तरह बनाओ।







चिड़िया और लाली

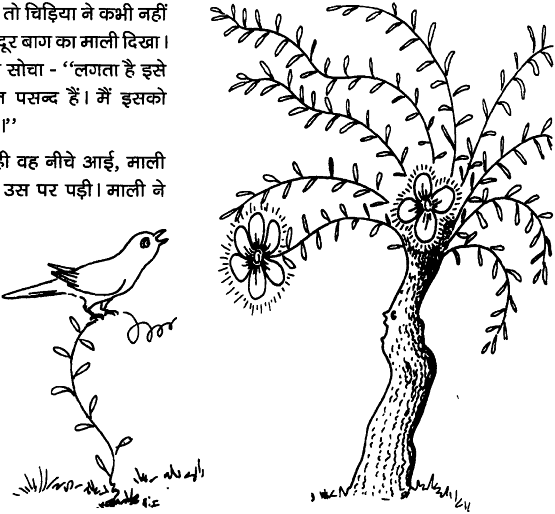
● सुष्मिता बैनर्जी

एक दिन खुश होकर पेड़ ने चिड़िया को दो फूल दिए। वे सुन्दर, बहुत सुन्दर थे। चिड़िया ने सोचा - "मैं एक फूल किसी और को दूँगी।" पर किसे? चोंच में सुन्दर फूल को लिए वह ढूँढने निकली।

उड़ते-उड़ते उसे एक बगीचा दिखा। उसमें तरह-तरह के फूल थे। ढेर सारे फूल। हवा में उनकी खुशबू थी। ऐसा बाग तो चिड़िया ने कभी नहीं देखा था। दूर बाग का माली दिखा। चिड़िया ने सोचा - "लगता है इसे फूल बहुत पसन्द हैं। मैं इसको फूल दूँगी।"

जैसे ही वह नीचे आई, माली की नज़र उस पर पड़ी। माली ने चौंककर कहा - "अरे, तुम्हारे पास तो बहुत सुन्दर फूल है, मुझे दे दो। ऐसा मेरे बगीचे में नहीं है। इससे मेरा बगीचा दुनिया में सबसे अच्छा हो जाएगा। मुझे इनाम मिलेगा।"

चिड़िया रूठकर उड़ गई। उड़ते-उड़ते उसे रंग ही रंग दिखे। एक आदमी खिड़की



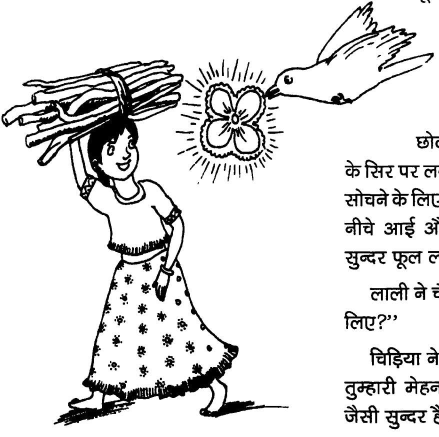
की रोशनी के पास बैठकर कपड़े पर कशीदा काढ़ रहा था।

ऐसा कशीदा तो चिड़िया ने कभी नहीं देखा था। चिड़िया ने सोचा - "लगता है इसे सुन्दरता बहुत पसन्द है। मैं इसे फूल दूँगी।"

जैसे ही वह नीचे आई, उस आदमी की नज़र उस पर पड़ी। कशीदा काढ़ने वाले ने चौंककर कहा - "अरे, तुम्हारे पास तो बहुत सुन्दर फूल है, मुझे दे दो। ऐसा मेरे कशीदे में नहीं है। इसे काढ़कर मेरा कशीदा दुनिया का सबसे अच्छा कशीदा होगा। मैं राजा को भेंट में दूँगा।"

चिड़िया रूठकर उड़ गई। उड़ते-उड़ते एक जगह उसे खूब सारे कबूतर नज़र आए। एक औरत सबको दाने दे रही थी। ऐसा दृश्य देखकर चिड़िया खुश हुई। उसने सोचा - "लगता है इस औरत को चिड़ियों से, जानवरों से बहुत प्यार है। मैं इसे फूल दूँगी।"

जैसे ही वह नीचे आई, उस औरत की नज़र उस पर पड़ी। कबूतरों को दाना खिलाने वाली औरत ने चौंककर कहा - "अरे, तुम्हारे पास तो बहुत सुन्दर फूल है, मुझे दे दो। मैं ऐसा फूल भगवान को चढ़ाऊँगी तो मेरी सारी कामनाएँ पूरी हो जाएँगी। तुम यह दाने की बोरी ले लो।"



चिड़िया रूठकर उड़ चली। उड़ती चली, उड़ती चली। तभी उसे दूर एक छोटी लड़की लाली दिखी। लाली के सिर पर लकड़ी का गठ्ठर था। चिड़िया सोचने के लिए नहीं ठहरी। चुपचाप उड़कर नीचे आई और लाली के बालों में वह सुन्दर फूल लगा दिया।

लाली ने चौंककर कहा - "फूल - मेरे लिए?"

चिड़िया ने कहा - "हाँ, तुम्हारे लिए। तुम्हारी मेहनत के लिए, जो इस फूल जैसी सुन्दर है।"

● चित्र योगीराज

खेल दुनिया भर के



लॉन टेनिस दुनिया के दो-तीन सबसे ज़्यादा लोकप्रिय खेलों में से एक है। इसे फुटबॉल, क्रिकेट की तरह ही चाव से देखा जाता हैं। लॉन टेनिस के मैच सालभर चलते रहते हैं। दुनिया का शायद ही कोई देश हो जहाँ लॉन टेनिस न खेला जाता हो। लेकिन अमेरिका और यूरोप महाद्वीप में यह खूब खेला जाता है।

इतिहास : कहते हैं लॉन टेनिस 'ज्यू डि पॉम' नाम के एक फ्रेंच खेल से जन्मा है। यह बारहवीं-तेरहवीं सदी में फ्रांस में खेला जाता था। तब इसे रॉयल टेनिस कहा जाता था। जबकि आज ब्रिटेन में इसे 'रियल टेनिस' कहा जाता है। अमेरिका में कोर्ट टेनिस और ऑस्ट्रेलिया में इसे 'रॉयल टेनिस' कहा जाता है।

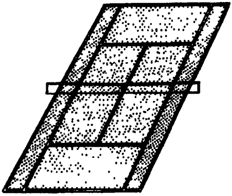
हालांकि टेनिस के जन्म से कई विवाद जुड़े हैं, मगर फिर भी इस खेल को उपजाने का श्रेय मेजर वॉल्टर विंगफील्ड को जाता है। उन्होंने इसका ज़िक्र 1873 में अपनी एक किताब में किया था। 1874 में उन्होंने इस खेल का 'पेटेन्ट' करवाया। उन्होंने इस खेल के कोर्ट का डिज़ाइन एक रेतघड़ी या डमरू के आकार का बनाया था। काफी बाद में कोर्ट आयताकार बनने लगे। धीरे-धीरे और कई परिवर्तन आए। जे.एम. हीथकोट ने टेनिस के लिए सूती फ्लालेन की अस्तर लगी रबर की बॉल विकसित की।

एम.सी.सी. यानी इंग्लैण्ड के मेरिलबोन क्रिकेट क्लब ने टेनिस के विकास में बड़ा योगदान दिया। 1875 में टेनिस के नियम भी एम.सी.सी. ने तैयार किए।

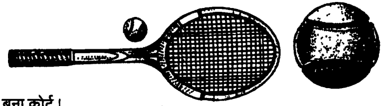
ऑल इंग्लैण्ड क्रिकेट क्लब का 1875 में लिया गया एक निर्णय टेनिस के लिए खास महत्व रखता है। निर्णय था कि विम्बलडन में टेनिस का एक मैदान बनाया जाए। यह साल टेनिस के इतिहास में 'मील का पत्थर' साबित हुआ। इसी मैदान के शुरुआती मैचों ने टेनिस को लोकप्रिय बनाया। 1877 में इसी मैदान पर टेनिस की पहली चैम्पियनशिप हुई। और हाँ पहली बार 24 मीटर लम्बे और 8 मीटर चौड़े आयताकार कोर्ट में टेनिस का मैच खेला गया।

1884 से पहले सिर्फ पुरुषों के टेनिस मैच होते थे मगर 1884 में विम्बलडन में महिलाओं के टेनिस मैच भी शुरू हो गए।

बीसवीं सदी के शुरू में ही टेनिस का पहला अंतर्राष्ट्रीय टूर्नामेंट शुरू हुआ। यह आज भी होता है। इसकी शुरुआत संयुक्त राज्य अमेरिका के टेनिस चैम्पियन 'डवाइट डेविस' ने की थी। उन्हीं के नाम पर इसे 'डेविस कप' कहा गया। ओलम्पिक में भी लॉन टेनिस के मुकाबले होते हैं। डेविस कप के अलावा टेनिस की चार बड़ी प्रतियोगिताएँ होती हैं। ये हैं – ऑस्ट्रेलियन ओपन, अमेरिकन ओपन, फ्रेंच ओपन और विम्बलडन।

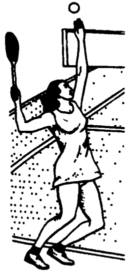


टेनिस की नाप जोख : टेनिस दो तरह के कोर्ट पर खेला जाता है। एक तो हार्ड कोर्ट, जिसे लकड़ी, कंक्रीट या अन्य कठोर मिश्रणों से बनाया जाता है।



दूसरा ग्रास कोर्ट, यानी घास के मैदान पर बना कोर्ट। कोर्ट की नाप जोख देखें तो यह ग्यारह मीटर चौड़ा और चौबीस मीटर लम्बा एक आयताकार मैदान होता है। युगल मुकाबलों के लिए ये ही सीमा रेखाएँ होती हैं एकल मुकाबलों में इसी मैदान में लम्बाई में दो रेखाएँ होती हैं। जिन्हें दोनों तरफ की लम्बाई वाली सीमा रेखाओं से साढ़े चार-साढ़े चार मीटर छोड़कर खींचा जाता है। यह एकल मुकाबलों की साइड लाइन होती है। मैदान के बीच से एक रेखा खींचकर इसे दो पालों में बाँटा जाता है। इसी रेखा के बिल्कुल ऊपर दो खम्भों से एक नेट लगा होता है। नेट ज़मीन को छूता हुआ लगाया जाता है। इसकी ऊँचाई 91 से. मी. यानी लगभग 3 फुट होती है।

दोनों पालों की चौड़ाई वाली सीमा रेखा से नेट की तरफ साढ़े पाँच मीटर दूर दो रेखाएँ खींची जाती हैं। इन दोनों रेखाओं के बिल्कुल बीच से लम्बाई में एक रेखा खींची जाती है जो इन दोनों रेखाओं को मिलाती है। इसे सेंटर लाइन कहते हैं। युगल मुकाबलों में दोनों पालों के दो हिस्से लेफ्ट कोर्ट और राइट कोर्ट कहलाते हैं। इसे समझने के लिए दिए गए कोर्ट के चित्र की मदद लेना।



रैकेट की फ्रेम, लकड़ी, स्टील या किसी अन्य मिश्रित धातु की हो सकती है। रैकेट 80 सेंटीमीटर लम्बा और अधिक से अधिक 31 सेंटीमीटर चौड़ा हो सकता है। पुरुषों के लिए रैकेट का वज़न साढ़े तीन सौ से चार सौ ग्राम तक होता है जबकि महिलाओं के मुकाबलों के लिए तीन सौ से साढ़े तीन सौ ग्राम।

टेनिस की बॉल सफेद या पीले रंग की हो सकती है। हाँ लेकिन वज़न 56 से 59 ग्राम के बीच होना चाहिए। साथ ही गेंद की बाहरी सतह एक समान बगैर ऊपरी सिलाई वाली होना चाहिए।

टेनिस मैच : पुरुषों के लिए टेनिस मैच अधिकतम पाँच सेट के हो सकते हैं जबकि महिलाओं के लिए तीन सेट तक खेल चलता है।

पुरुषों के मैचों में तीन सेट के बाद दस मिनिट का विश्राम होता है जबकि महिलाओं के मैचों में दो सेटों के बाद यह विश्राम दिया जाता है। गर्म जलवायु वाले देश में विश्राम 45 मिनिट तक का हो सकता है।

खेल की शुरुआत सिक्का उछालकर की जाती है। जो खिलाड़ी टॉस जीतता है वह चाहे तो पाला चुन ले या फिर सर्विस चुन ले।

खेल का लक्ष्य गेद को रैकेट द्वारा इस तरह मारना होता है कि वह नेट के पार विपक्षी खिलाड़ी के पाले में इस तरह उछले कि वह उसे न लौटा पाए। अगर वह उसे नहीं लौटा पाता तो विरोधी खिलाड़ी को एक अंक मिलता है। ऐसे चार अंक जीतने पर अगर ड्यूस की स्थिति (बराबर अंक) न हो तो वह एक गेम जीत जाता है। और अगर वह ऐसे छह गेम जीत ले तो एक सेट जीत जाता है। जो खिलाड़ी पहले तीन सेट जीतता है वह उस मैच को भी जीत लेता है।

खेल के दौरान और भी कई स्थितियाँ बनती हैं। जैसे ड्यूस की स्थिति को ही ले लें। मैच शुरू होने पर विपक्षी की एक गलती पर दूसरे खिलाड़ी को 15 अंक मिलते हैं, अगली गलती पर 15 और अंक यानी

तब स्कोर 30 हो जाता है। और तीसरे पर 10 अंक मिलते है यानी 40हो जाता है। अगर दोनों में खिलाड़ियों के अंक बराबर यानी 40-40 हैं तो विपक्षी की अगली गलती पर दूसरा खिलाड़ी गेम नहीं जीत पाएगा। बल्कि उसे इस बार 'एडवांटेज' मिलेगा। जब वह इस एडवांटेज के बाद अंक अर्जित करेगा तब जाकर वह एक गेम जीतेगा। यानी उसे एक सेट का पहला अंक मिलेगा। मगर यदि स्थिति इसके उलट है यानी किसी गेम में दोनों खिलाड़ियों के अक बराबर नहीं है तो 40 अंकों वाले खिलाड़ी को विपक्षी की अगली गलती पर ही गेम मिल जाएगा।

ऐसी ही स्थिति होती है टाई ब्रेकर, सेट अधिक लम्बे न खिचें इसलिए यह नियम बनाया गया। आमतौर पर किसी सेट मे खिलाड़ी का स्कोर 6 ऑल यानी 6-6 हो गया है। तो सेट तब तक चलता रहता है जब तक कि दोनों खिलाड़ियों के अंकों का अतर कम से कम दो न हो जाए। जो खिलाड़ी पाँच अंकों के बाद अपने विपक्षी खिलाड़ी के अकों से दो अंक ज्यादा बनाएगा। वही सेट जीत पाएगा।

लेकिन टाई ब्रेकर का उपयोग कुछ प्रतियोगिताओं के निर्णायक सेट मे नहीं किया जाता। यानी फाइनल सेट में जिस खिलाडी ने पहले छह अंक बना लिए वही उस सेट का विजेता होता है। कुछ प्रतियोगिताओं के सभी सेटों मे इसका उपयोग करते हैं।

सर्विस करने का भी एक खास तरीका होता है। सर्विस करने के लिए खिलाड़ी गेंद हवा में उछालता है और जमीन पर गिरने से पहले उसे रैकेट से विरोधी पाले में खेल देता है। सर्विस करते समय खिलाड़ी अपनी जगह पर ही खड़ा रहता है, उसे चहलकदमी की इजाजत नहीं होती है। सर्विस अगर कोर्ट के बाएँ हिस्से से की गई हो तो विरोधी खिलाड़ी के कोर्ट के बाईं ओर ही गेंद गिरनी चाहिए।

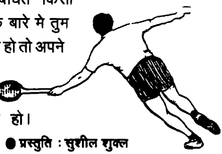
पाला बदलने को लेकर भी टेनिस चैम्पियनशिपों में नियम है। पहले और तीसरे गेम के समाप्त होने पर खिलाड़ी पाला बदलते हैं। इसके बाद हर सेट में एक के अंतर से हर गेम में पाला बदला जाता है यानी पहले फिर तीसरे फिर पाँचवें गेम में।

एक खिलाड़ी को कब-कब अंक मिलते है उन स्थितियों पर भी गौर करें। एक तो अगर विरोधी खिलाड़ी अपने पाले में गेंद को दो टप्पे खा जाने दे, तो वह अंक खो देता है। अगर उसके रैकेट से निकली गेद विरोधी टीम के पाले से बाहर टप्पा खाती है तो भी वह खिलाड़ी अपना अंक खो देता है। अगर गेंद लौटाते समय कोई खिलाड़ी गेंद को नेट के पार नहीं भेज पाता तो भी वह अंक खो देता है। यदि विरोधी खिलाड़ी के शॉट को लौटाते समय गेद रैकेट के अलावा शरीर के किसी भाग को छू जाए तो भी उस खिलाड़ी को अक खोना पडता है।

युगल मैचों में सर्विस के क्रम को छोडकर बाकी सभी नियम एकल मैचों की तरह ही होते है। इसलिए हम सर्विस के इसी क्रम को समझते हैं। मान लो किसी मैच के एक पाले में 'क' और 'ख' दो खिलाड़ी है। मान लो 'क' नाम के खिलाड़ी को पहले सर्विस करनी है।.....विरोधी टीम भी इसी तरह फैसला कर लेती है कि अगले गेम में कौन सर्विस करेगा। मान लो विरोधी टीम ने फैसला किया कि उनकी ओर से 'म' खिलाडी सर्विस करेगा।

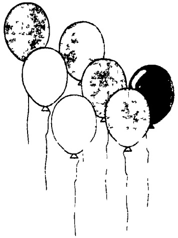
अब 'क', 'ख' मे से 'ख' तीसरे गेम मे सर्विस करेगा। इसी तरह चौथे गेम में विरोधी टीम का 'म' का साथी खिलाडी सर्विस करेगा। इसी तरह क्रम चलता रहता है।

लॉन टेनिस के और भी कई पेचीदा नियम है। सब के सब यहाँ दे पाना बहुत मुश्किल है। इसलिए अगर टेनिस से सम्बंधित किसी विशेष स्थिति के बारे मे तुम जानकारी चाहते हो तो अपने बड़ों से तो पूछोगे ही। हमें भी लिख सकते हो।



● प्रस्तुति : सुशील शुक्ल

हम भी अगर बच्चे होते...



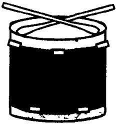
हम भी अगर बच्चे होते
नाम हमारा होता गबलू बबलू
खाने को मिलते लड्डू
और दुनिया कहती हैप्पी बर्थ डे टू यू
कोई लाता गुड़िया मोटर रेल, तो कोई फिरकी लट्टू
कोई चाबी का टट्टू
और दुनिया कहती हैप्पी बर्थ डे टू यू
हम भी अगर बच्चे होते..

न नौकरी की चिंता, न रोटी की फिकर
नन्हे-मुन्ने होते हम तो, देते सौ हुकम
पीछे फिरते डैडी-मम्मी बनकर नौकर
चॉकलेट बिस्कुट टॉफी खाते और पीते दूध्धू
और दुनिया कहती हैप्पी बर्थ डे टू यू
हम भी अगर बच्चे होते..



कैसे-कैसे नखरे करते घरवालों से हम
पल मे हँसते, पल मे रोते, करते नाक मे दम
अक्कड़-बक्कड़, लुका-छुपी, कभी छुआ छू
करते दिन भर हल्ला-गुल्ला और उधम
और कभी जिद पर अड जाते.जैसे अड़ियल टट्टू
और दुनिया कहती हैप्पी बर्थ डे टू यू
हम भी अगर बच्चे होते...





अब तो ये हाल है कि जब से बीता बचपन
माँ से झगड़ा, बाप से टक्कर, बीवी से अनबन
कोल्हू के हम बैल बने हैं, धोबी के गध्धे
दुनिया भर के डण्डे सर पे खाएँ दनादन
बचपन अपना होता तो न करते ढेचूँ-ढेचूँ
और दुनिया कहती हैप्पी बर्थ डे टू यू
हम भी अगर बच्चे होते...

फिल्म दूर की आवाज, गायक . मोहम्मद रफी, आशा भोंसले, मन्ना डे तथा साथी
गीतकार शकील बदायूनी, संगीतकार . रवि

गाड़ीवान का लड़का

आर. के. नारायण

आर. के. नारायण हमारे देश के प्रसिद्ध लेखक थे। तुमने उनके बारे में ज़रूर सुना होगा। उन्होंने कई उपन्यास और कहानियाँ लिखीं। बच्चों के लिए लिखा गया उनका उपन्यास 'स्वामी और उसके दोस्त' तो बहुत लोकप्रिय हुआ। यह उपन्यास दक्षिण भारत के काल्पनिक शहर 'मालगुड़ी' और उसमें रहने वाले लोगों के बारे में है। स्वामी और उसके दोस्तों की रोज़मर्रा की रोचक घटनाएँ ही इसका मुख्य आधार हैं। इसी उपन्यास पर आधारित टी.वी. सीरियल *मालगुड़ी डेज़* तो तुम्हें भी याद होगा। बड़ों के लिए लिखी गई उनकी एक कहानी पर 1960 के आसपास बनी फिल्म *गाइड* आज भी बहुत पसंद की जाती है।

आर. के. नारायण का जन्म मद्रास में 10, अक्टूबर1906 को हुआ था। उनकी स्कूली शिक्षा वहीं हुई। उन्होंने अपने बारे में लिखी किताब में कहा है कि उन्हें स्कूल जाना बिल्कुल पसन्द नहीं था। स्कूल की पढ़ाई के बाद कॉलेज में दाखिले के लिए एक परीक्षा में वे फेल हो गए थे। जिस विषय में वे फेल हुए थे वह था अंग्रेज़ी। इस पर उन्हें आश्चर्य भी हुआ था क्योंकि वे मानते थे कि अंग्रेज़ी उनका सबसे प्रिय विषय है। जब वे संसद सदस्य बने, तब उन्होंने इस बात पर बहुत ज़ोर दिया कि बच्चों की शिक्षा बेहतर बनाई जाए।

उनकी लिखी किताब 'स्वामी और उसके दोस्त' अगर तुमने अभी तक न पढ़ी हो तो अब ज़रूर पढ़ना। यहाँ उसी का एक हिस्सा दिया जा रहा है।

॥ एक ॥

स्वामीनाथन के दो तरह के रिश्ते थे। एक तो था सोमू, शंकर और मटर के साथ, जो विशुद्ध स्कूली था और स्कूल का गेट बन्द होने के साथ अपने आप खत्म हो जाता था। दूसरा था राजम और मणि के साथ, जो मानवीय अधिक था। अब चूँकि स्कूल बन्द था और उनके पास समय ही समय था तथा सभी हमेशा साथ-साथ रहते थे, अतः उन्होंने छुट्टियाँ बिताने का बहुत अच्छा कार्यक्रम बनाया।

स्वामीनाथन के जीवन की एक बड़ी साध थी कि वह एक पहिया ले। वह रात-दिन इसी के सपने देखता था। वह साइकिल के पुराने पहिये की कल्पना करके खुश होता था, जिसमें न टायर हो, न तारें। बस लकड़ी की छड़ी को खाँचे में फँसाओ और पहिया हवा से बातें करने लगता है। उसे ऊबड-खाबड रास्ते पर चलता देख और सफाई से मोड खाते देख कितना मजा आता है। दौडते समय उससे ऐसी आवाज़ निकलती है जो कानों को संगीत का आनन्द देती है। स्वामीनाथन ने सोचा कि उस सगीत को सुनकर मालगुड़ी मे कोई भी एक मील दूर से जान सकता था कि स्वामीनाथन आ रहा है। कभी-कभी वह रात साढ़े दस बजे तक पहिये के बारे में सोचता हुआ जागता रहता था। अपने पिता के दोस्तों से लेकर जान-पहचान के सफाई कर्मचारियों तक सबसे कहता फिरता था कि कोई उसे साइकिल का पहिया ला दे। वह किसी भी बढिया साइकिल को देखते समय उसके पहियों के बारे में सोचता रहता था। एक रात उसने सपना देखा कि वह अपने पहिये पर बैठकर नालप्पा के बाग के निकट से सरयू पार कर गया है। लोहे का पहिया आगे बढ़ने की कोशिश में नदी की रेत में धँस गया, लेकिन जब वह दूसरे किनारे पर

पहुँचा तो पहिया एक तरह का घोड़ा बन गया था। वह एक छलांग में उसे घर ले आया, फिर रसोई मे, फिर उसके बिस्तर पर ले गया और उसके पास लेट गया। यह सब तो बहुत अजीब था, लेकिन सपने का शुरू का भाग काफी सच था। सुबह जागने पर पहिया न पाकर उसे बहुत निराशा हुई।

अत्यन्त निराशा में उसने एक दिन अपने मन की बात थोड़ी-सी जान-पहचान वाले एक गाडीवान से कही। गाड़ीवान ने सहानुभूति दिखाई। उसने माना कि पहिये के बिना जीना सचमुच मुश्किल है। फिर उसने कहा कि वह कुछ घण्टों में ही पहिया लाकर दे सकता है, अगर स्वामीनाथन उसे पाँच रुपए दे। यह बहुत बडी रकम थी और स्वामीनाथन इसकी आशा दूर भविष्य में अपने पिता जितना ऊँचा होने पर ही कर सकता था। उसने यही बात गाडीवान से कही। इस पर गाड़ीवान ने उसे बताया कि पहिया कैसे मिल सकता है। शुरू में उसे छह पाइयाँ चाहिए। थोडे समय बाद उसके छह आने बन जाएँगे और उसके बाद इन्हें छह रुपयों में बदला जा सकता है। इन छह रुपयों में से पाँच रुपए स्वामीनाथन पहिये पर खर्च कर सकता है। और छठा रुपया अपनी इच्छा के अनुसार खर्च कर सकता है।

स्वामीनाथन ने कहा कि छठा रुपया गाडीवान को देकर उसे बहुत खुशी होगी। अगर स्वामीनाथन के मन में कोई संदेह था भी तो गाडीवान की लच्छेदार बातों ने उसे दूर कर दिया। गाडीवान का पाई से आना रुपया बनाने का तरीका इस प्रकार था। उसके पास घर में एक खास धातु का बर्तन है जिसमें वह ताबे के सारे सिक्के रखता है। इसमें एक चमत्कारी जड़ी बूटी डाली जाती है (इस जड़ी-बूटी का नाम वह किसी को नहीं बता सकता था, चाहे कोई कितनी ही धमकी दे)। उसने बताया कि वह सिक्कों के बर्तन को ज़मीन मे गाड़ता है और फिर आधी रात के वक्त उस पर बैठकर योग क्रिया करता है और इस तरह समय आने पर ताँबा चाँदी मे बदल जाता है। वह सोना भी बना सकता है, किन्तु उसके लिए जो



जड़ी-बूटी चाहिए उसे ढूँढने उसे ढाई सौ मील दूर अनजान जगहों पर जाना पड़ेगा और इतने कष्ट उठाना उसे लाभदायक नहीं लगता।

स्वामीनाथन ने उससे पूछा कि वह फिर कब उससे मिलने आए, क्योंकि उसे छह पाई प्राप्त करने के लिए कोई योजना बनानी पड़ेगी और उसे कार्यरूप देना पड़ेगा। गाड़ीवान ने कहा कि उसे तुरन्त पैसे नहीं मिले तो वह कई हफ्तों तक नहीं मिलेगा, क्योंकि उसका मालिक बाहर जा रहा है और उसे भी साथ जाना होगा। स्वामीनाथन ने बड़ी खुशामद करके उससे छह घण्टे का समय माँगा और घर की तरफ भाग लिया।

पहले उसने दादी से पैसे माँगे। दादी ने लगभग आँसू बहाकर कहा कि उसके पास पैसे नहीं है और उसने खाली डिब्बा उलटकर दिखा दिया कि वह कितनी तंगी में चल रही है।

"दादी, मैं जानता हूँ तुम्हारे तकिए के नीचे बहुत पैसे हैं।"

"नहीं बेटा, चाहो तो तलाशी ले लो।" स्वामीनाथन ने दादी से कहा कि वह बिस्तर से नीचे उतरे और तब तकियों और दरियों के नीचे ढूँढने लगा।

"तुम्हें इस वक्त पैसे क्यों चाहिए?" दादी ने पूछा

"अगर तुम्हारे पास हैं तो मुझ पर उपकार कर दो। नहीं तो बेकार के सवाल क्यों पूछती हो?"

दादी ने माँ को आवाज़ दी, "तुम्हारे पास पैसे हों तो लड़के को छह पाई दे दो।" लेकिन स्वामीनाथन पर उपकार करने को कोई तैयार नहीं था। पिताजी ने तो एक सेकण्ड में मना कर दिया। स्वामीनाथन ने इस पर सोचा कि वे अपने मुवक्किलों से जो इतने पैसे लेते हैं, वे सब कहाँ चले जाते हैं।

अन्त में उसे एक रास्ता दिखाई दिया। वह लेट गया और ठण्डे सीमेंट के फर्श से गाल सटाकर पिता की भारी-भरकम अलमारी के नीचे की अंधेरी जगह में कुछ ढूँढने लगा। उसे यूँ ही ख्याल आया कि इस जगह कुछ सिक्के बिखरे मिल सकते हैं। उसने अलमारी के नीचे हाथ डालकर चारों तरफ टटोला। उसके हाथ एक पुराना लिफाफा लगा जिस पर धूल, मकड़ी का जाला, एक तिलचट्टा और कुछ चुटकी धूल थी।

कभी-कभी उसे लगता था कि वह पूरी लगन से काम करे तो जादू का करतब भी कर सकता है। उसे अध्यापक एब्नेजर की यह बात भी याद थी कि प्रार्थना करने पर भगवान मदद करता है।

उसने गत्ते का एक छोटा डिब्बा लिया और उसमें दो कंकड़ रखकर उसे रेत और पत्तों से ढँक दिया। फिर उस डिब्बे को वह पूजाघर में ले गया और उसे एक कोने मे रख दिया। यह एक छोटा-सा कमरा था, जिसकी दीवारों पर कुछ देवी-देवताओं की तस्वीरें थीं और कुछ पीतल और काँसे की मूर्तियाँ छोटे नक्काशीदार लकडी के ताक से स्वामीनाथन को घूर रही थीं। हवा में फूलों, कपूर और धूप की गंध फैली थी।

स्वामीनाथन देवी-देवताओं के सामने खड़ा हो गया और पूरे दयनीय भाव से उसने देवी-देवताओं को बताया कि डिब्बे में क्या है और आशा व्यक्त की, कि दो कंकड, दो-तीन पाई के सिक्कों में बदल जाएँ। साथ ही उसने यह भी बताया कि ये पैसे उसे तत्काल क्यों चाहिए। उसने वायदा किया कि देवताओं ने उसकी मदद की तो वह अपना अँगूठा चबाना बन्द कर देगा। आँखें बन्द करके उसने कहा, "श्रीराम, तुमने रावण को मारा था हालाकि उसके दस सिर थे। क्या तुम मुझे छह पाई नहीं दे सकते?.... अगर मैं तुम्हें अभी छह पाइयाँ दूँ तो तुम मुझे पहिया कब दोगे? मैं चाहता हूँ तुम मुझे उस जड़ी-बूटी का नाम बता दो.... मणि क्या मैं तुम्हें पहिया प्राप्त करने का रहस्य बताऊँ? हे राम, मुझे छह पाइयाँ दो, मै एक साल तक अँगूठा चबाना छोड़ दूँगा.....।"

इसके बाद वह घर के पिछवाड़े यूँ ही टहलता रहा। अपने आप को दिलासा देता रहा कि कुछ मिनट बाद जब वह पूजाघर में जाएगा तो कंकड़ सिक्कों में बदले मिलेंगे। उसने आधे घण्टे का समय इसके लिए निश्चित किया।

दस मिनिट बाद वह पूजाघर में आया। उसने देवी-देवताओं को दण्डवत प्रणाम किया, फिर उठा और डिब्बा उठाकर पिछवाड़े एकांत जगह पर आ गया। धड़कते दिल से डिब्बा खोला। फिर उसे जमीन पर उलट दिया। रेत-

पत्तों में उसकी उँगलियाँ घूमी और अंत में उसके हाथ में दो कंकड़ आ गए। जब उसने गत्ते के डिब्बे, बिखरे पत्तों और कंकड़ों को ज्यों का त्यों देखा तो उसका मन क्रोध से भर गया। देवताओं की उदासीनता पर उसे बड़ा गुस्सा आया और उसकी आँखों में आँसू आ गए। उसने देवताओं को गाली देनी चाही। लेकिन ऐसा करने में उसे डर लगा। इसकी बजाय उसने सारा गुस्सा गत्ते के डिब्बे पर उतारा और उसे ठोकर मारकर दूर फेंका तथा पत्तों और रेत को पैरों के नीचे कुचल दिया। फिर रुककर उसने सोचा कि देवता इस काम को पसन्द करेंगे या नहीं। उसे डर लगा कि इससे देवता नाराज़ न हो जाएँ। वह पैसों के बिना काम चला सकता है लेकिन देवता नाराज़ हो गए तो खतरनाक बात होगी। वे उसे परीक्षा में फेल कर सकते हैं, माता-पिता, दादी और छोटे भाई को मार सकते हैं। उसने डिब्बे को उठाकर फिर उसमें रेत, पत्तियाँ और ककड डाल दिए, जिन्हें एक मिनट पहले उसने पैरों से मसल-कुचल दिया था। उसने केले के पेड के नीचे एक गड्ढा खोदा और बडी श्रद्धा से डिब्बे को उसमें दबा दिया।

॥ दो ॥

दस मिनट बाद वह आबू लेन में मणि के घर के बाहर खड़ा था। उसने दो या तीन बार सीटी बजाई। मणि नहीं आया। स्वामीनाथन ने सीढियाँ चढ़कर दरवाजा खटखटाया। अन्दर से साकल खुलने की आवाज़ आई और वह उत्सुकता में डूबा खड़ा रहा। उसे डर था कि मणि की जगह किसी और ने दरवाज़ा खोला तो वह अपने आने का कारण नहीं बता सकेगा। दरवाजा खुला और उसका दिल डूब गया। घनी भौंहों वाला एक भारी-भरकम आदमी उसके सामने था। उसने पूछा, ''तुम कौन हो?''

स्वामीनाथन ने जवाब में पूछा, ''आप कौन हैं? मणि कहाँ है?'' सवाल का अभिप्राय था कि वह मणि से मिलने आया था, किन्तु वह सामने खड़े आदमी को नहीं जानता और न जानना चाहता था कि वह कौन है। किन्तु हड़बड़ी में वह इस बात को अच्छे ढंग से नहीं कह पाया।

''तुम मुझसे मेरे ही घर में पूछते हो कि मैं कौन हूँ।'' घनी भौंहों वाला आदमी गरजा। स्वामीनाथन मुड़ा और सीढ़ियाँ फलाँगकर भागा। किन्तु घनी भौंहों वाले आदमी ने आदेश दिया, ''ऐ बच्चे, इधर आओ।'' उस आदेश का पालन न करना असम्भव था। स्वामीनाथन धीरे-धीरे सीढ़ियों की तरफ बढ़ा। डर के मारे उसकी आँखें फटी जा रही थीं। उस आदमी ने कहा, ''भाग क्यों रहे हो? अगर तुम मणि से मिलने आए हो तो मिलते क्यों नहीं?'' यह बिल्कुल कायदे की बात थी।

''कोई बात नहीं,'' स्वामीनाथन ने बिना मतलब के यूँ ही कह दिया।

''अन्दर आओ और मिल लो।'' स्वामीनाथन ने डरते-डरते घर मे प्रवेश किया। मणि दरवाज़े के पीछे भीगी बिल्ली बना खडा था। दोनों एक-दूसरे की ओर टकटकी लगाकर देखते रहे। किसी के भी मुँह से एक शब्द नहीं निकला। घनी भौंहों वाला आदमी दरवाज़े पर उनकी तरफ पीठ किए खड़ा गली की तरफ देख रहा था।

स्वामीनाथन ने उँगली उसकी तरफ उठाई और सिर को जरा-सा झटका देकर पूछा, ''यह कौन है?'' मणि ने फुसफुसाकर कहा, ''चाचा।''



अचानक चाचा ने मुड़कर कहा, "तुम यहाँ एक-दूसरे पर टकटकी लगाए क्यो खड़े हो? क्या तुम इसीलिए आए थे? अरे, जीभ तो हिलाओ।" इस सलाह के बाद वह आदमी दो कुत्तों को भगाने के लिए गली मे उतर गया। कुत्ते आपस में लड़ते-लड़ते घर के बाहर आकर गुत्था-गुत्था हो रहे थे। अब वह इतनी दूर चला गया था कि लड़कों की आवाज़ वहाँ नहीं पहुँच सकती थी।

स्वामीनाथन बोला, "तुम्हारे चाचा? मैं तो जानता ही नहीं था। मणि, क्या तुम अभी बाहर नहीं चल सकते?..... नहीं? मैं एक ज़रूरी काम से आया हूँ। मुझे...बहुत ज़रूरी.... छह पाइयाँ चाहिए... किसी भी तरह.. गाड़ीवान कई हफ्तों के लिए बाहर चला जाएगा. .. फिर मौका नहीं मिलेगा.... नहीं जानता पहिये के बिना क्या करूँगा।" वह रुक गया। मणि का चाचा कुत्तों के आसपास मंडरा रहा था, उन्हें गालियाँ दे रहा था और बेसब्री से पत्थर ढूँढ रहा था। स्वामीनाथन ने अपनी बात जारी रखी, "मेरी ज़िंदगी इसी पर टिकी है। तुम नहीं दोगे तो मैं कहीं का नहीं रहूँगा। जल्दी करो।"

"मेरे पास नहीं हैं, मुझे कोई पैसा नहीं देता," मणि ने उत्तर दिया।

"तुम्हारे चाचा पैसे कहाँ रखते हैं? बक्से में देखो।"

"मैं नहीं जानता।"

"मणि यहाँ आओ," चाचा ने गली से आवाज़ लगाई, "इन शैतानों को भगाओ। पत्थर ढूँढकर लाओ।"

॥ तीन ॥

"राजम, क्या तुम मुझे एक सिपाही दे सकते हो?" स्वामीनाथन ने दो सप्ताह बाद पूछा।

"सिपाही! क्यों?"

"इस शहर में एक बदमाश है। उसने मुझे ठग लिया है।" उसने गाड़ीवान से हुए सौदे की बात राजम को बता दी। *स्वामीनाथन कहता गया, " और अब वह जब भी मुझे* देखता है, मुझे न पहचानने का बहाना करता है। मैं उसके घर जाता हूँ तो मुझसे कहा जाता है कि वह घर पर नहीं है। मैं घर के अन्दर उसे किसी को गाली देते सुन सकता हूँ। अगर मैं अपनी बात पर अड़ा रहता हूँ तो वह कहला भेजता है कि वह कुत्ते की ज़ंजीर खोल देगा और वह मुझे मार डालेगा।"

"क्या उसके पास कुत्ता है?" राजम ने पूछा।

"मैंने तो कभी नहीं देखा।"

"तो फिर घर में घुसकर उसे एक लात क्यों नहीं जमाते?"

"कहना आसान है। जब भी मैं उसके घर जाता हूँ, डर के मारे काँपता रहता हूँ। गाड़ीवानों के घरों में क्या-क्या होता है, किसे पता? वह अपना घोड़ा मेरे ऊपर छोड़ सकता है।"

"छोड़ने दो, घोड़ा तुम्हें खा नहीं जाएगा।" मणि बोला।

"घोड़ा खाता नहीं? मुझे यह जानकर खुशी हुई। एक दिन मेरे साथ रंगा दर्जी के पास चलो और सुनो कि वह घोड़ों के बारे में क्या-क्या कहता है। घोड़े कभी-कभी शेरों से भी ज़्यादा भयानक होते हैं।" स्वामी ने बड़ी गम्भीरता से कहा।

"तुम किसी दिन उसके घर के बाहर इतज़ार करो और बाहर निकलते ही उसे दरवाज़े पर पकड़ लो।" राजम ने सुझाव दिया।

"मैंने कोशिश की थी। लेकिन जब भी वह घर से निकलता है, अपनी गाड़ी पर होता है। मुझे देखते ही वह लम्बी चाबुक लेता है। मैं उसकी पहुँच से दूर होकर चिल्लाता हूँ, लेकिन उसका कोई लाभ नहीं होता। घोड़ा हवा से बातें करने लगता है। और सोचो, उसने मेरे दो आने ठग लिए।"

"तुम तो छह पाइयाँ बता रहे थे। नहीं?"

"लेकिन उसने मुझसे छह-पाइयाँ दो बार और ठग ली हैं।"

"तो फिर डेढ़ आना हुआ," राजम बोला।

"नहीं राजम, दो आने थे।"

"अरे भाई, बारह पाई का एक आना होता है। तुमने तीन बार छह-छह पाईयाँ दीं। कुल 18 पाइयाँ हुईं, यानी डेढ़ आना।"

''यह बेकार की बहस है। इसकी परवाह कौन करता है कि कितनी पाइयों का आना होता है।'' स्वामीनाथन बोला।

''लेकिन पैसे के मामले में सही-सही हिसाब होना चाहिए। अच्छा आगे बताओ।''

''गाड़ीवान ने पहले मुझसे छह पाइयाँ लीं- इस वायदे के साथ कि दो दिन में ये चाँदी के सिक्के बन जाएँगी। चार दिन तक वह मुझे चकमा देता रहा और तब उसने छह पाइयाँ और माँगी -यह कहकर कि उसने 12 पाइयों के लिए जड़ी-बूटी जमा की है। उसने फिर मुझे चकमा दिया और यह कहकर कि इनके बिना सारा प्रयोग बेकार हो जाएगा, छह पाइयाँ और माँगी। उसके बाद मैं जब भी उसके पास जाता हूँ, वह कोई न कोई बहाना बनाकर मुझे टरका देता है। कई बार उसने शिकायत की कि मौसम में खराबी की वजह से काम बहुत धीरे-धीरे चल रहा है। दो दिन पहले उसने कहा वह मुझे तथा पैसों के बारे में कुछ नहीं जानता। अब तुम खुद देख लो कि वह किस तरह पेश आ रहा है-मुझे पैसों की परवाह नहीं, लेकिन मैं उसके लड़के से नफरत करता हूँ-वह काला-कलूटा बदमाश! जब भी मुझे देखता है, मेरी ओर देखकर मुँह बिचकाता है और उसने मुझे धमकी दी है कि गदी नाली के पानी की बाल्टी मेरे सिर पर उलट देगा। एक दिन उसके हाथ में मैंने खुला चाकू देखा। मैं उसकी पिटाई करना चाहता हूँ। उसका बाप मेरे दो आने तभी वापस करेगा।''

॥ चार ॥

अगले दिन स्वामीनाथन और मणि गाड़ीवान के घर की तरफ चल दिए। स्वामीनाथन को इस बात पर पश्चात्ताप होने लगा था कि उसने दोस्तों को सारी बात क्यों बताई। मामला काबू से बाहर होता जा रहा था। इस बात को देखते हुए कि राजम और मणि इस मामले में इतनी रुचि ले रहे थे, कोई नहीं कह सकता था कि मामला कहाँ तक पहुँचेगा।

राजम ने गाड़ीवान के लड़के का अपहरण करने की योजना बनाई। मणि को इस पर अमल करना था। योजना के अनुसार मणि गाड़ीवान के लड़के को दोस्त बनाएगा। इस शुरू के दौर में स्वामीनाथन को कुछ खास नहीं करना था। उसे मणि को गाड़ीवान का घर दिखाना भर था।

गाड़ीवान स्वामीनाथन के घर से एक मील दूर पश्चिम की ओर कीलाचेरी में रहता था, जहाँ करीब एक दर्जन झोंपड़ियाँ थीं, जिनके मैले धुएँ में काले पड़े बदबूदार कमरे बेतरतीबी के साथ-साथ सटे हुए थे।

अब वे उस जगह से कुछ गज दूर थे। स्वामीनाथन ने प्रतिशोध के चक्के को रोकने की आखिरी बार कोशिश की। ''मणि, मुझे लगता है कि गाड़ीवान के लड़के ने पैसे वापस कर दिए हैं।''

''क्यों?''

''मुझे लगता है....''

''तुम्हें सचमुच लगता है। दिखाओ मुझे।''

स्वामीनाथन ने अनुरोध किया, ''उसे छोड़ दो मणि। तुम नहीं जानते उस लड़के से छेड़खानी करके क्या-क्या मुसीबत खड़ी होगी..।''

''बकवास बन्द करो, नहीं तो मैं तुम्हारी गर्दन मरोड़ दूँगा।''

''मणि, पुलिस और वह लड़का सभी बहुत भयानक हैं, कुछ भी कर सकते हैं।'' उसके मन में गाड़ीवान के लड़के का बहुत डर बैठा हुआ था। कभी-कभी रात में उसे एक काला, गंदा और क्रूर चेहरा दिखाई दे जाता था और वह डर के मारे काँपने लगता था। यह चेहरा गाड़ीवान के लड़के का होता था।

''वह तीसरे घर में रहता है।'' स्वामीनाथन ने इशारा किया।

अंतिम क्षण में मणि ने अपनी योजना बदली और स्वामीनाथन पर जोर डाला कि वह भी गाडीवान के घर तक चले। स्वामीनाथन इसके विरोध में सड़क पर बैठ गया। लेकिन मणि अपनी बात पर अड़ा रहा। वह स्वामीनाथन को घसीटकर गाड़ीवान के घर तक ले गया और उसे ज़ोर-ज़ोर से डाँटने लगा।

''मणि, मणि, तुम्हें क्या हो गया है?''

''गधे के बच्चे!'' वह स्वामीनाथन की तरफ देखकर

गरजा और उसने अपना हाथ उसे मारने के लिए उठाया।

स्वामीनाथन रोने लगा। मणि ने उसका गला दबाने की कोशिश की। उनके आसपास तरह-तरह के लोगों की भीड़ जमा हो गई-फूले हुए पेट वाले बच्चे, काली सूरत वाली औरतें और उनके मरद। मुर्गी के चूज़े चीं-चीं करके इधर-उधर भागे। धूप तेज़ थी। दो-तीन कुत्ते पेड की छाया मे ऊँघ रहे थे। मुर्गीखाने और मैले कपड़ों की दुर्गंध चारों तरफ फैली हुई थी।

तभी उस घर से, जिसे स्वामीनाथन ने गाड़ीवान का घर बताया था, करीब तीन फुट लम्बा, मैला-कुचैला, फटे कपड़े पहने एक लड़का निकला। भीड़ में रास्ता बनाकर वह अच्छी जगह आकर खड़ा हो गया और अँगूठा चूसते हुए लड़ाई का मज़ा लेने लगा। मणि ने स्वामीनाथन की तरफ इशारा करके भीड़ की ओर देखकर तिरस्कार से कहा, ''यह छोकरा, मै नहीं जानता यह कौन है, अचानक मुझसे दो आने माँग रहा है। मैंने इसे पहले कभी नहीं देखा। यह कहता है मैने इससे दो आने लिए हैं।'' मणि इसी तरह पद्रह मिनट तक बोलता रहा। इसके बाद गाड़ीवान के लडके ने अँगूठा मुँह से निकाला और बोला, ''इसे जेल भेजना चाहिए।'' इस पर मणि ने मुस्कराकर उसकी बात का अनुमोदन किया और पूछा, ''क्या तुम इसे थाने ले जाने में मेरी मदद करोगे?''

मणि ने उससे पूछा, ''तुम कैसे जानते हो कि इसे थाने ले जाना चाहिए?''

''मैं जानता हूँ।''

''क्या तुम्हे भी कभी इसने इसी तरह तंग किया है?'' मणि ने पूछा।

''नहीं,'' लड़का बोला।

''वो दो आने कहाँ हैं जो तुम्हारे बाप ने मुझसे लिए थे?'' स्वामीनाथन ने आँसूओं से भीगे चेहरे से उस लड़के की तरफ देखा। इस बीच भीड़ समझौता कराने की बेमन की कोशिश करके छँट गई थी। अचानक मणि ने उस लड़के से पूछा, ''क्या तुम यह लट्टू लोगे?'' उसने लाल चमकदार लट्टू उसे दिखाया। लडके ने उसे लेने के लिए हाथ बढ़ाया।

मणि बोला, ''मैं इसे नहीं दे सकता। अगर तुम मेरे साथ चलो तो मैं इससे भी बड़ा लट्टू तुम्हें दे सकता हूँ। आओ, हम दोस्ती कर लें।''

लड़के को कोई ऐतराज़ नहीं था, ''क्या तुम इसे दिखाओगे भी नहीं?'' उसने पूछा।

मणि ने लट्टू उसे दे दिया। लडके ने दो-तीन बार उसे हाथ मे लेकर घुमाया और फिर पलक झपकते ही वहाँ से चम्पत हो गया। सारी स्थिति को समझने में मणि को कुछ समय लगा।

उसने दूर एक झोंपडी में लड़के को घुसते देखा। वह उसके पीछे भागा। मणि झोंपड़ी के पास पहुँचा तो दरवाज़ा बन्द हो चुका था। मणि ने एक दर्जन बार दरवाज़ा खटखटाया और तब एक रूखा-सा आदमी बाहर आकर बोला कि लड़का वहाँ नहीं है। दो-तीन खतरनाक पड़ोसी भी आए और उन्होंने उसे धमकी दी कि अगर उसने उन्हीं के इलाके में आकर उन्हें तग करने की हिम्मत की तो वे उसे ज़िन्दा गाड़ देंगे। स्वामीनाथन बार-बार मणि से कह रहा था कि वह वापस आ जाए। किन्तु उसे हटाने के लिए बहुत कुछ करना पडा। वह दरवाज़ा पीटता रहा।

पड़ोसी कुछ गज की दूरी पर हाथ मे पत्थर लिए खडे हो गए और पेड के नीचे सोए कुत्तों को जगा दिया गया।

जब कुत्ते उनकी तरफ दौड़ते आए, तब जाकर मणि ने स्वामीनाथन से कहा, ''भागो,'' और खुद भी तेजी से भागा।

कुछ पत्थर स्वामीनाथन की पीठ पर आ लगे। एक दो मणि पर भी पडे। एक धारदार पत्थर से मणि की दाईं एडी छिल गई। वे ऐसे भागे कि सामने की सड़क के सिवा न उन्हें कुछ दिखाई पडा और न सुनाई।

(नेशनल बुक ट्रस्ट द्वारा प्रकाशित 'स्वामी और उसके दोस्त' से साभार।)





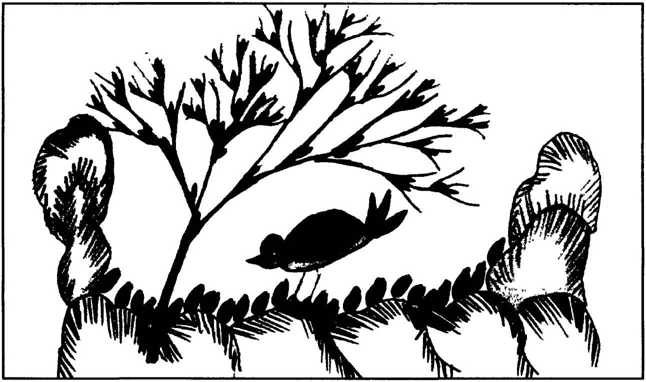
● भारती भसीन, आठवीं, जयपुर, राजस्थान



● नाम पता नहीं लिखा



● अंजली तिवारी, चौथी, छतरपुर, म.प्र.



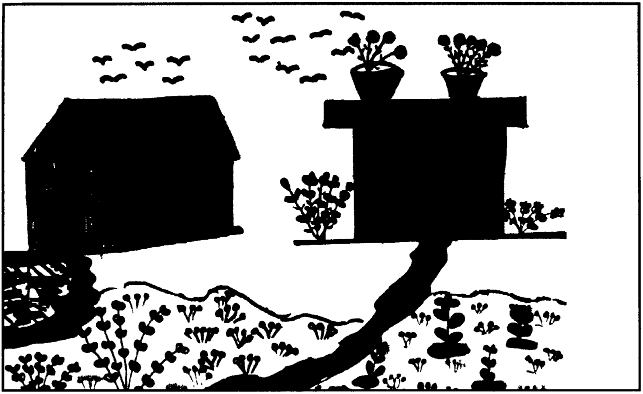
● मानसिंह व्याम, छठवीं, भोपाल, म.प्र.



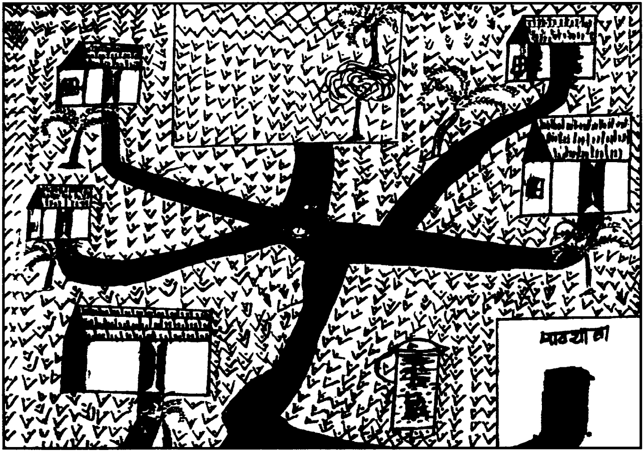
● रचित पुरी, दूसरी, चारबटिया, कटक, उड़ीसा



● विनोद प्रजापत, दसवीं, नान्देड़, छतरपुर, म.प्र.



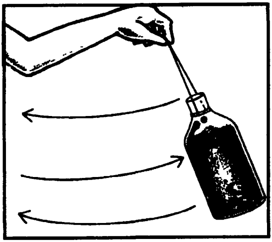
● मनु पांडे, छठवीं, अल्मोड़ा, उत्तराखण्ड



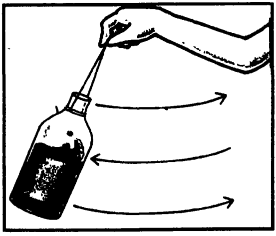
● टीकम सिंह दरोगा, आठवीं, मकरेड़ा, अजमेर, राजस्थान



एक बोतल, एक रस्सी का खेल



- इस खेल के लिए ज़्यादा कुछ नहीं बस एक प्लास्टिक की बोतल और एक-डेढ़ फुट की एक रस्सी ले लो।
- रस्सी के एक छोर से बोतल का मुँह बाँध दो।
- रस्सी को किसी कील पर लटका लो या फिर अपने मित्र से कहो कि वह इसे पकडे।
- अब बोतल को एक तरफ से धक्का दो।
- ज़रा गिनो कि बोतल कितनी बार दाएँ से बाएँ आई गई।
- इस सख्या को चाहो तो कागज़ पर लिख लो।
- अब बोतल पानी से आधी भर दो। फिर से लगभग पहले जितनी तेज़ी से धक्का दो। गिनो, इस बार बोतल कितनी बार दाएँ से बाएँ आई गई। इस संख्या को भी कागज़ पर लिख लो।
- अब बोतल को लबालब भर दो।
- अब फिर लगभग उतनी ही तेज़ी से धक्का दो। ध्यान से, इस बार भी बोतल के डोलने की सख्या नोट कर लो। इन्हीं तीन तरीकों से बोतल को दो बार और धक्का दो। इससे तुम्हें हर तरीके के तीन-तीन मान मिल जाएँगे। इन्हें भी कागज़ पर उतार लो। फिर हर तीन मान का औसत निकाल लो।
- अभी बोतल को हम लगभग एक सीधे रास्ते पर धक्का दे रहे थे। अब बोतल को घुमाना है।
- पहले खाली बोतल को घुमाना है फिर आधी भरी और फिर पूरी भरी बोतल को।



● अब अपने कागज़ को देखकर हमें दो तीन बातें बताओ। एक तो दाएँ-बाएँ डोलने वाले प्रयोग में तीनों स्थितियों में से किस स्थिति में बोतल ज़्यादा बार डोली।

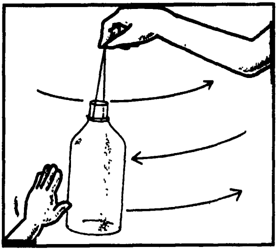
● दूसरे वाले तरीके, यानी जब बोतल को घुमाया था तो किस स्थिति में बोतल ज़्यादा बार घूमी?

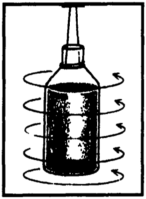
● दोनों स्थितियों में खाली या भरी बोतल ही ज़्यादा बार क्यों घूमी या डोली। तुम्हें क्या लगता है?

● यह प्रयोग करते समय एक बात तो शायद तुम्हारे दिमाग में भी आई होगी कि हर बार बोतल पर जो धक्का हम लगाते हैं वह एक-सा रह पाता होगा कि नहीं। क्योंकि अलग-अलग बल से धक्का लगने से प्रयोग गलत परिणाम दे सकता है।

● क्या तुम्हें इसके लिए कोई युक्ति सूझी, कि हर बार बोतल पर एक बराबर बल कैसे लगाएँ? क्या इसके लिए हमारे आस-पास की चीज़ मदद करेगी?

● हमें ज़रूर लिखना कि तुम्हारे प्रयोग से क्या-क्या बातें सामने आईं।

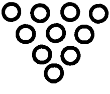




अप्रैल, 2001 के माथापच्ची के हल

2 3 2 या 5.
3. AF, BC, DH और चौथा EG.
4. कम से कम तीन टिकटें निकालनी पड़ेगी।
5. गायब अंक है – 8.
7. छह रेखाओं से
8. दोनों रेलगाड़ी बराबर रफ्तार से चल रही है।
9. बाल संवारने की कंघी से एक दो बार बाल संवारो फिर उसे गिलास के पास लाओ।

10



वर्ग पहेली 115 का हल

	पि	ना	क		शि	क	न	
अ		का	रा	को	र	म		सू
ल			ह	ल	क		नी	र
ख	न	क	ना		त	र	बू	ज
		ल				थि		
म	र	मा	र		प	क	वा	न
रो	ज		ख	रा	द			गा
सा		ह	वा	ई	या	न		डा
	च	क	ला		त्रा	स	दी	

इस पहेली का सही हल भेजने वाले हैं – योगिता, ममता, अमोल्या, खण्डवा, म. प्र. और मनु पाण्डे, अल्मोड़ा, उत्तराखण्ड। इन्हें यह अंक भेजा जा रहा है।

नाटक

एक दिन का हैडमास्टर

● हसन जमाल

(उच्च माध्यमिक विद्यालय के मुख्याध्यापक का साधारण-सा कमरा। मध्य में लकड़ी की एक खस्ता-सी टेबल रखी है। टेबल पर एक ओर कुछ फाइलें रखी हैं। दूसरी तरफ दो-तीन बेतरतीब रखी किताबें, स्याही की दावात, कलम, पेंसिलें, घण्टी, लकड़ी का डण्डा आदि। टेबल की दाईं ओर एक रैक में कुछ फाइलें। पीछे दीवार पर गांधी जी का चित्र टंगा है। उससे नीचे अलमारी में कुछ कप और शील्ड जमाए हुए हैं। बाईं ओर कमरे का दरवाज़ा है जिस पर छींट का पर्दा झूल रहा है। ग्यारह बजे दिन का समय है। पर्दा उठने पर हैडमास्टर की कुर्सी पर राजेश बैठा है।)

राजेश : **(घण्टी टुनटुनाकर)** माधोसिंह। माधोसिंह।

माधोसिंह : **(सलाम ठोंककर)** जी साहेब। **(वह मुस्करा रहा है।)**

राजेश . ए! तुम हँसते क्यों हो?

माधोसिंह : आप कहें तो रो लूँ। **(रोने का उपक्रम करता है।)**

राजेश : ए रोना नहीं- रोना नहीं। जानते हो, आज हैडमास्टर हम हैं। जाओ, देखो, क्लासों में लड़के सीधी तरह बैठे हैं या नहीं?

माधोसिंह : जब क्लास में मास्टर नहीं होते तो कौन सीधी तरह बैठता है। आप बैठते थे, साहेब?

राजेश : शटअप! जितना कहूँ उतना करो। जबान को लगाम देना सीखो।

माधोसिंह : **(अकड़कर)** मैं जिनावर नहीं हूँ, साहेब। लगाम जिनावर लगवाते हैं।

राजेश : **(हाथ जोड़ते हुए)** अच्छा बाबा, तुम फूटो। मुझे काम करने दो। **(फाइलें टटोलने लगता है, माधोसिंह जाने लगता है।)**

राजेश : और सुनो।
(माधोसिंह सुनी-अनसुनी कर देता है।)

राजेश : **(ज़ोर से घण्टी बजाकर)** अबे, सुनता नहीं।

माधोसिंह : **(नाराज़गी की मुद्रा में)** मैं पीछे से दी हुई आवाज नहीं सुनता हूँ। जो कहना है, सामने कहो। हैडमास्टरी करनी है तो शर्मा साहेब की तरह बोल्ड बनो।

राजेश : अरे! शर्मा साहब क्या हैडमास्टरी करते थे। उन्होंने तो स्कूल का बेड़ागर्क कर दिया है।

माधोसिंह : आप क्या करेंगे, साहेब?

राजेश : तुम्हारा सिर! जाओ, सरू को भेज देना।

माधोसिंह : **(कान खुजलाकर)** सरू?......कौन सरू?

राजेश : सरू को नहीं जानते! अरे भई; श्रीराम।

माधोसिंह : अच्छा, यूँ कहो न! सरू-सरू क्या करते हो, श्रीराम बोलो।

राजेश : **(सर पकड़कर)** ओहो। यह चपरासी भी क्या मुसीबत है।
(माधोसिंह जाता है। एक लड़का नेकर हाथ में उठाए प्रवेश करता है।)

राजेश : **(डपटकर)** क्या है?

लड़का : सर! सर!

राजेश . सर-सर ही बोलोगे या कुछ कहोगे भी।

लड़का : **(उँगली आगे बढ़ाकर)** सर! मुझे एकी लगी है। मैं जाऊँ?

राजेश · पेशाब की परमिशन के लिए हैडमास्टर के पास आए हो! तुम्हे शर्म नहीं आई।

लड़का : आई तो थी, लेकिन आपने ऐलान किया था न कि आपकी इजाज़त के बिना कोई कुछ भी नहीं करेगा।

राजेश · **(सिर पकड़कर)** ओह! मैंने क्लास न छोड़ने के लिए कहा था। पेशाब पर पाबन्दी नहीं लगाई थी।

लड़का **(मासूम सूरत बनाकर)** बडों से पूछे बिना कोई काम नहीं करना चाहिए न, सर!

राजेश : **(कुर्सी से उठते हुए)** अबे, जाता है या उठाऊँ डण्डा।

(लड़का उसी दशा में मुस्कराता हुआ भाग जाता है। श्रीराम प्रवेश करता है।)

श्रीराम किस पर डण्डा उठा रहे थे, भाई।

राजेश · देखो न, मुझसे परमिशन लेने आया कि मै पेशाब करने जाऊँ।

(श्रीराम ठठाकर हँसता है।)

राजेश . **(गंभीर मुद्रा में)** सब ठीक-ठाक है न?

श्रीराम . कुछ भी ठीक नहीं है।

राजेश . क्या मतलब?

श्रीराम : लड़के शोर मचा रहे हैं कि छुट्टी कर दी जाए।

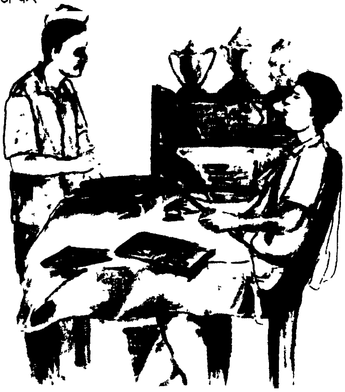
राजेश : हरगिज़ नहीं। हमें पहली बार हैडमास्टरी करने का चांस मिला है और लड़के छुट्टी चाहते है। फिर हम हैडमास्टरी किस पर करेंगे?

श्रीराम . लड़के कहते हैं, सभी अध्यापक वेतन बढ़ाने के लिए हड़ताल पर गए हुए है, पढ़ाएगा कौन?

राजेश : हर क्लास का मानीटर पढाएगा -समझे।

श्रीराम : और मानीटर ही उनको उकसा रहे हैं छुट्टी के लिए।

राजेश : यह तुमने पहले क्यों नहीं बताया?



श्रीराम : अब बताया है, तो क्या कर लोगे?

राजेश : **(दाँत पीसकर)** मैं सबको छठी का दूध याद दिला दूँगा। राजेशकुमार की हुकूमत में कोई छुट्टी-उट्टी नहीं होगी, समझे।

श्रीराम : यार! तुम बार-बार मुझ पर क्यों बरस रहे हो। जरा बाहर निकलकर देखो, सूरते-हाल कैसा है?

(पार्श्व में ''राजेश हाय-हाय'' की आवाज़ें आती हैं। राजेश के चेहरे का रंग उड़ने लगता है। एक कांस्टेबल प्रवेश करता है।)

कांस्टेबल : हैडमास्टर साहब कहाँ हैं?

राजेश : तुम्हें यहाँ कौन दिखाई दे रहा है?

कांस्टेबल : **(हँसकर)** मुझे तो तुम छोकरे दिखाई दे रहे हो। क्या तुम हैडमास्टर के लड़के हो?

राजेश : **(डण्डा मेज पर पटककर)** शटअप! हम आज हैडमास्टर हैं। आज इस स्कूल में हमारी हुकूमत है। कैसे पुलिसवाले हो, यह भी मालूम नहीं, शिक्षक लोग आज हड़ताल पर हैं।

कांस्टेबल : बेटे! जब तक हमें ऊपर से हुक्म नहीं मिलता, हमारे कान पर जूं नहीं रेंगती।

श्रीराम : **(बीच में)** क्या पुलिसवालों के सिर में इतनी जुएँ होती हैं कि हुक्म मिलते ही रेंगना शुरू कर देती हैं।

(कांस्टेबल खा जाने वाली नज़रों से घूरता है।)

राजेश : अपना मुद्दा बयान करो। किसलिए आए हो?

कांस्टेबल : थानेदार साहब ने हैडमास्टर को बुलाया है।

राजेश : **(डरकर)** जो मै नहीं हूँ।

कांस्टेबल : तो यहाँ क्यों बैठे हो। उठो....उठो। **(मूँछों पर ताव देता है। राजेश एक बार घबराकर उठ जाता है। फिर बैठ जाता है। श्रीराम भी ऐसा करता है।)**

माधोसिंह : **(पर्दे में से मुँह निकालकर)** अरे डरपोक हैडमास्टर जी! अपने शर्मा साहब थानेदार जी के बच्चों को पढ़ाने जाया करते हैं।

राजेश : **(खिसियाकर)** ओह, अपने थानेदार साहब को कह देना हैडमास्टर साहब हड़ताल पर है, कल आएँगे।

(कांस्टेबल चुपचाप चला जाता है)

राजेश : **(श्रीराम से)** जब से इस कुर्सी पर बैठा हूँ, एक पल के लिए भी चैन से बैठने को नहीं मिला।

श्रीराम : क्यों, इस कुर्सी में क्या खटमल हैं?

(तभी एक तहमदधारी, खूँख्वार आदमी प्रवेश करता है। उसकी घनी मूँछें हैं, आँखें लाल हो रही हैं।)

तहमदधारी : **(गरजकर)** ए लौंडे! हैडमास्टर कहाँ है?



राजेश	:	**(तनिक घबराते हुए)** हैडमास्टर तो हम हैं।
तहमदधारी	:	क्यों बे पिद्दी के शोरबे। मुझसे मजाक करता है। **(राजेश का गिरेबान पकड़ने को होता है।)**
श्रीराम	.	**(बीच में)** शांत होइये, श्रीमान! जरा धीरज रखिए। बात यह है कि आज सब मास्टर लोग हड़ताल पर हैं। यह हमारी छात्र यूनियन के नेता हैं। इन्होंने सिर्फ आज के लिए काम सम्भाला है।
तहमदधारी	:	हूँ! जमीन से उगे नहीं, हैडमास्टर की कुर्सी पर बैठ गए। क्या जमाना आया है। सुनो..... **(दोनों को बारी-बारी घूरकर)** हैडमास्टर से कह देना, गंगू उस्ताद आया था। मेरे मुन्ने को जिस मास्टर ने बेंत मारी है उसकी मैं हड्डी-पसली तोड़कर रख दूँगा। **(जाता है। माधोसिंह खिसियाकर हँसता है। राजेश और श्रीराम गला खंखारते हैं और भय से इधर-उधर देखते हैं।)**



एक लडका	:	**(अन्दर आकर)** क्या मैं अन्दर आ सकता हूँ, सर।
राजेश	:	अन्दर तो हो। बोलो, क्या कहना है?
लड़का	·	सर! एक समस्या आ खड़ी हुई है, सर, लड़के पूछ रहे हैं - हुमायूँ अकबर के बाप का क्या था, सर?
राजेश	:	**(तपाक से)** बाप था, सर।
लड़का	:	सर, आप मेरा सवाल नहीं समझे, सर। सर, मुझे यह जानना है कि हुमायूँ अकबर के बाप का क्या था, सर?
राजेश	:	हुमायूँ....अकबर....के....बाप....का क्या....था? सरू, तुम जानते हो?
श्रीराम	:	**(दोहराता है)** हूमायूँ.....अकबर.. .के...
माधोसिंह	:	**(पर्दे की आड़ से)** हैडमास्टर की कुर्सी पर बैठने से कोई ज्ञानी नहीं हो जाता। इतना भी नहीं समझे, हुमायूँ अकबर के बाप का ''नाम'' था। **(लड़का खिलखिलाकर भाग जाता है।)**
राजेश और श्रीराम	:	**(एक साथ)** हैं?

राजेश : सर्रू। यह कैसी हैडमास्टरी है। जो आता है, चित कर जाता है।
श्रीराम : भइये। ये कुर्सियाँ ऐसी ही होती हैं। इन पर बैठने वालों को हर किस्म की स्थिति का मुकाबला करने के लिए तैयार रहना चाहिए।
राजेश : मैं समझता था, सिर्फ रौब झाड़ने के लिए ही कुर्सी पर बैठा जाता है।
श्रीराम : यह तो तुम्हारी भूल थी। तुम्हें अशोककुमार के नाम पर एतराज नहीं करना था। वह बनता हैडमास्टर और निपटता।
''कुर्सी छोड़ो-छुट्टी दो।'' ''कुर्सी छोड़ो-छुट्टी दो।'' ''राजेश हाय-हाय।'' **(आवाज़ें निरन्तर पास आ रही हैं।)**
राजेश : **(कुर्सी से उठते हुए)** अब क्या करें, सर्रू?
श्रीराम : अपने सिर को बचाओ, प्यारे। अपनी ही जमात आ रही है। जो आज तक हमने बड़ों के साथ किया है, वही भुगतने को तैयार हो जाओ।
(पन्द्रह-बीस लड़कों का झुण्ड कमरे में प्रवेश करता है। लड़कों की मुट्ठियाँ तनी हुई हैं। आक्रामक मुद्रा में हैं। सबसे आगे अशोककुमार है।)
अशोक : **(मेज पर हथेलियाँ टिकाकर)** मैं पूछता हूँ छुट्टी क्यो नही करते?
राजेश : **(तैश में)** मैं कहता हूँ, छुट्टी नहीं होगी।
अशोक : छुट्टी कैसे नहीं होगी। साथियो, आगे बढो।
श्रीराम : **(आगे बढकर)** सुनो! सुनो, भाइयो! शांत-शांत। ज़रा हमारी भी सुनो।
एक लड़का : **(चीखकर)** हम कुछ सुनना नहीं चाहते।
कई स्वर हम तो छुट्टी चाहते हैं।
राजेश : **(भर्राई हुई आवाज़ में)** भाइयो! हमें अनुशासन से काम लेना है।
अशोक : जो खुद अनुशासन भग करने वाला है; अब अनुशासन की बात करता है।
कई स्वर : शेम.. शेम.. .।
राजेश : **(हाथ जोड़कर)** मित्रो! यह मेरी प्रतिष्ठा का सवाल है। अगर कुछ नुकसान हो गया तो मेरी नाक कट जाएगी।
एक लड़का : नाक की इतनी ही चिंता है तो छुट्टी करो वरना... ।
अशोक : कुर्सी छोड़ो!
कई स्वर : छुट्टी दो या कुर्सी छोड़ो।
राजेश : ठीक है, कुर्सी छोड़ देता हूँ मगर छुट्टी नहीं दूँगा।
माधोसिंह : **(लड़कों के बीच जगह बनाते हुए आता है।)** साहेब, हड़ताल खत्म हो गई है। हैडमास्टर शर्माजी और सभी अध्यापक आ रहे हैं।
(लड़कों में खलबली मच जाती है।)

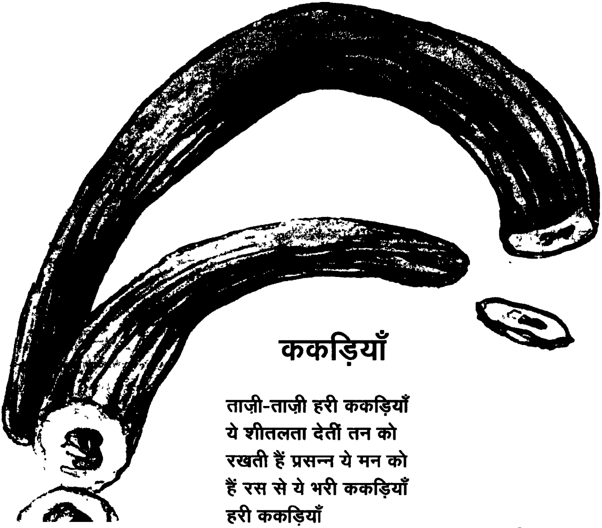


शर्माजी	:	यह क्या हो रहा है यहाँ पर? माधोसिंह! माधोसिंह।
माधोसिंह	:	जी, साहेब!
शर्माजी	:	मैंने कहा था, मेरे कमरे में किसी को घुसने न देना और यहाँ मैं देख रहा हूँ फौज की फौज खडी है।
माधोसिंह		साहेब। ये लोग मानते ही नही है। कोई कहता है, छुट्टी करो। कोई कहता है, हैडमास्टरी करूँगा।
शर्माजी		हूँ.. देखूँ तो सही, मेरी अनुपस्थिति मे कौन हैडमास्टर बना था।
अशोक	:	**(राजेश को आगे करते हुए)** सर, इसने आपकी कुर्सी हथियाई थी।
शर्माजी	:	**(व्यंग्य से)** ओह, यूनियन लीडर राजेश कुमार ... उर्फ हडताल विशेषज्ञ। आपके हैडमास्टर बनने से तो स्कूल की सारी समस्याएँ हल हो जानी चाहिए। क्यों बच्चो?
कई स्वर	:	**(अलग-अलग)** सर, आज घण्टी दस मिनट लेट लगी। स्कूल में पीने का पानी गैरहाजिर रहा। टीचर्स ने कक्षा में फिल्मी गाने सुनाए। स्कूल के एक चौथाई लडके मैटिनी शो में बैठे हैं।
शर्माजी		वाह-वाह! बडा शानदार अनुशासन रहा, राजेश! इसी तरह का स्कूल चलाने के लिए तुम आए दिन हडताल करवाते हो .. ?
राजेश	:	नही, सर मै माफी चाहता हूँ। और वायदा करता हूँ कि अब कभी भी हडताल न करूँगा, न करवाऊँगा।

(शर्मा जी राजेश के सिर पर हाथ फेरते हैं। लड़के शोर करते हुए कमरे से बाहर हो जाते हैं।)



सभी चित्र : विप्लव शशि



ककड़ियाँ

ताज़ी-ताज़ी हरी ककड़ियाँ
ये शीतलता देतीं तन को
रखती हैं प्रसन्न ये मन को
हैं रस से ये भरी ककड़ियाँ
हरी ककड़ियाँ



नदी किनारे है इनका घर
आती हैं ठेलों में चढ़कर
हैं कोमल ज्यों परी ककड़ियाँ
हरी ककड़ियाँ



गर्मी के मौसम में आतीं
छोटे बड़े सभी को भातीं
लू-लपटों से लड़ी ककड़ियाँ
हरी ककड़ियाँ

* शिवचरण चौहान
* चित्र : कादम्बरी मिश्रा

(कादम्बरी राष्ट्रीय डिज़ाइन संस्थान, अहमदाबाद के ग्राफिक डिज़ाइन विभाग की छात्रा हैं।)

सरल रेखा पर चला बिन्दु

एक था बिन्दु। वह बहुत ही जिज्ञासु प्रकृति का था। वह हर बात जानना चाहता था। जैसे ही उसे कोई अपरिचित रेखा दिखाई देती, वह तुरन्त पूछता , "इस रेखा का क्या नाम है? यह रेखा लम्बी है या छोटी?"

एक बार बिन्दु ने सोचा, 'मुझे हर बात कैसे पता चलेगी, अगर मैं हमेशा एक ही जगह बैठा रहूँगा। ठीक है, मैं यात्रा पर निकलता हूँ।'



बिन्दु निश्चय का पक्का था। वह यात्रा पर निकल पड़ा। सबसे पहले बिन्दु एक सरल रेखा पर आ खड़ा हुआ और फिर उस पर चलने लगा।

वह सरल रेखा पर चलता रहा, बहुत देर तक चलता रहा और आखिर में थक गया।

वह रुक गया और बोला,"मैं कब तक चलता रहूँगा? इस सरल रेखा का अन्त जल्दी आएगा या नहीं?"



यह सुनकर सरल रेखा हँस पडी और बोली, "बिन्दु, तुम कितने नादान हो। तुम अन्त तक नहीं पहुँच पाओगे। क्या तुम नहीं जानते कि सरल रेखा का अन्त कहीं नहीं है?"



"अगर ऐसी बात है तो मैं वापस लौट जाता हूँ," बिन्दु बोला। "मैं शायद गलत दिशा में जा रहा था।"

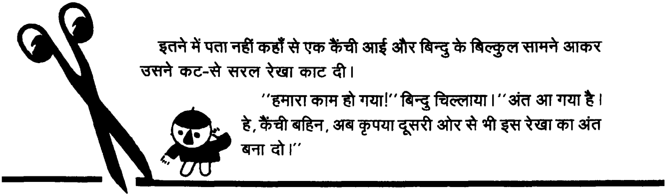
"उल्टी दिशा में भी अन्त नहीं आएगा। सरल रेखा का किसी भी दिशा में अन्त नहीं होता है।"

यह सुनकर बिन्दु बहुत हताश हुआ और बोला, "अब मैं क्या करूँ? मुझे क्या ऐसे चलते ही रहना पड़ेगा? क्या कभी अंत नहीं आएगा?"

"अगर तुम चलते-चलते बहुत थक गए हो और रुकना चाहते हो तो आओ, कैंची को सहायता के लिए पुकारते हैं।"

"चलो, बुलाते हैं।" बिन्दु खुश होता हुआ बोला, "पर हमें कैंची की क्या जरूरत है?"

"अभी देखोगे," सरल रेखा ने उत्तर दिया।



इतने में पता नहीं कहाँ से एक कैंची आई और बिन्दु के बिल्कुल सामने आकर उसने कट-से सरल रेखा काट दी।

"हमारा काम हो गया!" बिन्दु चिल्लाया। "अंत आ गया है। हे, कैंची बहिन, अब कृपया दूसरी ओर से भी इस रेखा का अंत बना दो।"

"अभी लो," कैंची ने कट-से दूसरी ओर से भी सरल रेखा काट दी।

"कितने मजे की बात है!" बिन्दु चिल्लाया, "मेरी सरल रेखा का क्या बन गया? एक तरफ से अंत, दूसरी तरफ से अंत। इसको क्या कहते हैं?"

"इसको टुकड़ा अथवा रेखा खण्ड कहते हैं," कैंची बोली। "बिन्दु, अब तुम सरल रेखा के एक रेखा खण्ड पर खड़े हो।"



"सीखा रेखा खण्ड, सीखा रेखा खण्ड," बिन्दु खुश होता हुआ बोलने लगा। वह रेखा खण्ड के एक सिरे से दूसरे तक आ-जा रहा था।

"मुझे यह नाम याद हो गया है। मुझे रेखा खण्ड पर चलना अच्छा लग रहा है पर इसका मतलब यह नहीं है कि मुझे सरल रेखा अच्छी नहीं लगी। उसके स्थान पर अब एक रेखा खण्ड और यह दो...., अरे, मुझे नहीं पता इनका क्या नाम है। ये भी क्या रेखा खण्ड हैं?"

"नहीं," कैंची ने उत्तर दिया। "इसका केवल एक सिरा है, दूसरे सिरे की ओर इनका अंत ही नहीं है। और फिर इनका नाम भी कुछ और ही है।"

"इनका क्या नाम है?"

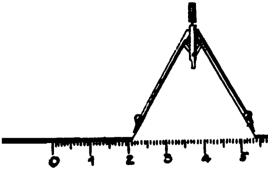
"इनको किरण कहते हैं।"



"यह एक किरण है, और दूसरी तरफ यह दूसरी भी एक किरण है।"

"अच्छा!" बिन्दु खुश होता हुआ बोला। "अब मैं समझ गया उनका यह नाम क्यों रखा गया है। वे सूरज की किरणों से मिलती-जुलती जो हैं।"

"तुम ठीक कहते हो," कैंची बोली। "सूरज की किरणें सूरज से शुरू होती हैं और अनंत तक चलती रहती हैं, अगर उनके मार्ग में कोई बाधा न आए। उदाहरण के लिए, पृथ्वी या चन्द्रमा या कृत्रिम उपग्रह।"

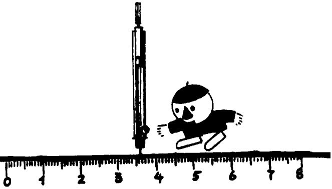


''इसका मतलब यह हुआ कि उस सरल रेखा से दो किरणें और मेरा रेखा खण्ड प्राप्त हुआ है। मेरी अच्छी बहिन कैंची, मै तुमसे प्रार्थना करता हूँ एक बार फिर से सरल रेखा बना दो, पर हाँ मेरे रेखा खण्ड को ऐसे ही रहने देना।''

''मेरे लिए यह काम असंभव है। हॉ, अगर परकार और पैमाने से सहायता करने के लिए कहा जाए....''

इतना कहकर कैंची ने उन दोनो को आवाज दी। परकार और पैमाने ने आकर अपना काम शुरू कर दिया। सर्वप्रथम परकार ने पैमाने के पास एक किरण रखी और फिर दूसरी, दोनो को एक दूसरे की ओर खींच कर मिला दिया। परकार ने दोनो किरणो को इतनी सफाई के साथ जोडा कि बिल्कुल पहले जैसी सरल रेखा बन गई। बिन्दु ने उस जगह को ढूँढने की बहुत कोशिश की जहाँ पर दोनों किरणे एक दूसरे के साथ जुड गई थी, पर उसे तनिक भी सफलता नहीं मिली।

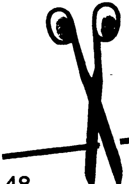
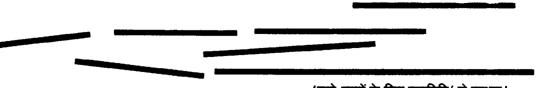
अब बिन्दु यह देखकर बहुत प्रसन्न था कि उसकी परिचित सरल रेखा साबुत है और उसका कुछ भी नही बिगड़ा है।



''इसका मतलब यह हुआ कि एक सरल रेखा में से एक ही नहीं, कई सारे रेखा खण्ड भी काटे जा सकते है'' बिन्दु ने सोचा।

बिन्दु की प्रार्थना पर कैंची ने सरल रेखा में से छोटे तथा बडे कई रेखा खण्ड काट दिए और परकार तथा पैमाने ने बची हुई किरणें जोड दीं। सबने देखा कि सरल रेखा फिर से साबुत हो गई।

तुम भी एक कागज, पैंसिल और पैमाना लेकर सरल रेखा बनाओ। फिर अलग-अलग लम्बाई के रेखा खण्ड बनाओ।

'नन्हे-मुन्नों के लिए ज्यामिति' से साभार।

कौन कितना तेज़

तुमने ये तो कई बार अनुभव किया होगा कि जब कोई चीज़ अचानक आँखों में लगने को होती है तो हमारी पलकें अपने आप झपक जाती हैं। इस तरह हमारी आँखें सुरक्षित रहती हैं। ऐसी कितनी ही घटनाएँ कई बार हमारे साथ घटती हैं... और हर बार तेज़ी से प्रतिक्रियाएँ भी हो जाती हैं।....अच्छा! क्या हम जानबूझकर भी इतनी तेज़ी से प्रतिक्रिया कर सकते हैं?

हम सायास यानी जानबूझकर की गई प्रतिक्रिया में कितना वक्त लेते हैं यह जानने के लिए एक आसान-सा प्रयोग करते हैं।

एक स्केल लो (जिसमें साफ-साफ पैमाने उकेरे गए हों।) अपने दोस्त से कहो कि वह किसी भी ऊँचाई पर अपना हाथ स्थिर कर ले।

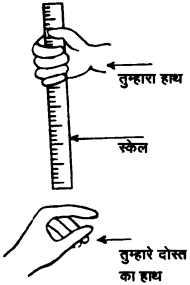
अब इस स्केल को तुम अलग-अलग ऊँचाई से उसके हाथ की सीध में गिराओ।

अपने दोस्त से कहो कि वह बगैर हाथ हिलाए दो उँगलियों के बीच इस गिरते स्केल को पकड़े। हाथ स्थिर रहे इसके लिए तुम टेबिल या वैसी ही किसी चीज़ पर हाथ रखकर यह प्रयोग कर सकते हो।

तुम्हें पता चलेगा कि तुम्हारा दोस्त कितनी ऊँचाई से स्केल गिराने पर स्केल पकड़ पाता है। अब तुम अपने अन्य मित्रों के साथ भी यह करके देखो।

इससे तुम पता लगा सकते हो कि कौन कितना तेज़ है प्रतिक्रिया करने में।

सबकी प्रतिक्रिया करने की गति अलग-अलग हो सकती है। और फिर यहाँ कोई प्रतियोगिता तो हो नहीं रही है। ● ● ●





30	16	18	26
10	44	22	24
32	14	20	34
28	26	40	6

(1)

इस वर्ग के सभी सोलह खानों में कोई न कोई अंक लिखा है। ज़रा से गुणा-भाग से तुम पता कर सकते हो कि इन अंकों में क्या ख़ास रिश्ता है?....... क्या तुम ऐसी ही ख़ासियत वाला एक और वर्ग बना सकते हो?

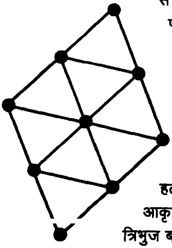


(2)

दावा-वादा, सदा-दास, सर-रस, राज-ज़रा....। और भी कितने ही शब्द हैं जिनके अक्षरों को आगे-पीछे करने पर भी उनसे अर्थ वाला शब्द बनता है। क्या तुम सिर्फ दस मिनिट में ऐसे ही दस और शब्द ढूँढ सकते हो?

(3)

इस आकृति को देखो। माचिस की सोलह तीलियों से बनी है यह। इसमें आठ त्रिभुज तो साफ नज़र आ रहे हैं। लेकिन गौर से देखने पर तुम्हें पता चलेगा कि इसमें आठ से ज़्यादा त्रिभुज हैं। तुम्हें इन सोलह तीलियों में से चार तीलियाँ इस तरह हटाना है कि इस आकृति में सिर्फ चार त्रिभुज बचे रहें....।

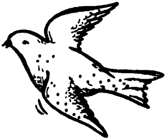


(4)

रंग-बिरंगे पक्षी देखना भला किसे अच्छा नहीं लगता। तभी तो आशी रोज़ शाम को घूम-घूमकर इन्हें देखती है। नया पक्षी देखते ही उसका पूरा हुलिया अपनी कॉपी में लिख लेती है। शुरू के बीस दिन उसने औसतन चार नए पक्षी देखे।

इक्कीसवें दिन सात नए पक्षी, बाईसवें दिन तेरह नए पक्षी और तेईसवें दिन आठ नए पक्षी देखे।.... ज़रा हिसाब तो लगाओ कि आशी ने इन तेईस दिनों में रोज औसतन कितने पक्षी देखे? और इन तेईस दिनों में कुल कितने पक्षियों का हुलिया उसकी कॉपी में दर्ज हो चुका होगा?







(5)

एक शाम तीन बच्चों ने बाग से कैरियाँ तोड़ने का मन बनाया। तीनों बाग में गए और जी भरकर कैरियाँ तोड़ीं। एक झोले में सब कैरियाँ इकट्ठी कर वे घर आ गए।

थोड़ी देर बाद जब बाकी दो थककर सो रहे थे तो तीसरा बच्चा कैरियों को गिनने में मशगूल था। गिनने के बाद उसने उन कैरियों के तीन बराबर हिस्से किए। लेकिन एक कैरी बच गई। उसने एक कैरी खाई और उन तीन ढेरियों में से एक ढेरी छुपाकर रख दी। बाकी दो ढेरियों को झोले मे रखकर वह सो गया।

थोड़ी देर बाद एक दूसरा बच्चा जागा। उसने भी कैरियाँ गिनी.... तीन हिस्से किए... फिर एक कैरी बच गई। उसने भी बची एक कैरी खाई और अपना एक हिस्सा छुपा दिया। वह सोया ही था कि तीसरे बच्चे की नींद खुली। उसने भी वही किया।... फिर एक कैरी बची... उसने कैरी खाई, अपना हिस्सा छुपाया और सो गया। सुबह तीनों ने बची कैरियों के तीन हिस्से किए... संयोग से फिर एक कैरी बच गई....।

इस बार ये बची कैरी तुम्हे मिलेगी अगर तुम बता पाए कि तीनों बच्चों ने कुल कितनी कैरियाँ तोडी थीं।

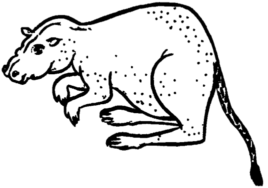
(6)

रवि के चार दोस्त हैं। चारों की ऊँचाई अलग-अलग है। मनीष, राशिद से दो इच लम्बा है। राशिद, स्वाति से दो इंच ठिगना है। और अमोल स्वाति से भी छह इंच लम्बा है। इन चारों की औसतन ऊँचाई 74 इंच है। क्या इन जानकारियों के आधार पर हम रवि के चारों दोस्तों की ऊँचाई पता कर सकते हैं?

(7)

परवेज़ को चित्र बनाने का शौक है। चित्र भी बड़े मज़ेदार! अब इस चित्र को ही ले लो। उन्होंने अपने तीन पसंदीदा जानवरों को मिलाकर एक नया जानवर बना डाला।

किसी का सिर है किसी की पूँछ और किसी तेज कूद लगाने वाले जानवर का धड़। क्या तुम बता सकते हो कि परवेज़ के बनाए इस चित्र में कौन-कौन से तीन जानवर हैं?



(8)

```
  1 1 1
  3 3 3
  5 5 5
  7 7 7
+ 9 9 9
-------
2 7 7 5
```

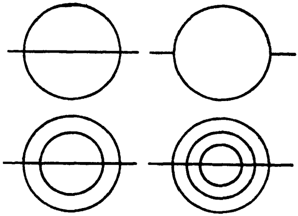
एक ही जगह बैठे रहना किसे अच्छा लगता है। इस 'गणित' के अंकों को भी तफ़रीह की सूझी। और इनमें से छह अंक अपनी जगह 0 को बिठाकर चले गए। अंकों के फेरबदल से उनका जोड़ भी गड़बड़ाया।

अब इन पाँचों नई संख्याओं का जोड़ 1 1 1 1 है।

क्या तुम पाँचों नई संख्याएँ बता सकते हो?

(9)

इन चार आकृतियों में से किसे बगैर हाथ उठाए और किसी भी लाइन पर दुबारा पेन घुमाए बगैर बना सकते हैं?

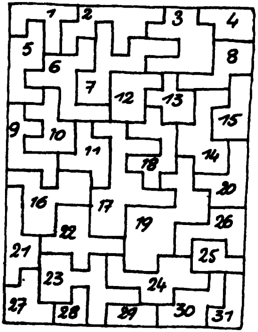


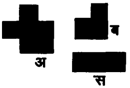
(10)

एक कारीगर एक दीवार बना रहा है। उसे ऊँचाई में दस ईंट लगानी हैं और हर ईंट दस सेंटीमीटर ऊँची है। हाँ हर ईंट के ऊपर दूसरी ईंट जोड़ने के लिए वह सीमेंट और रेत यानी गारे की 2 सेंटीमीटर की परत भी बनाता है।

क्या तुम बता सकते हो जब दसो ईंट जुड़ जाएँगी तो दीवार की ऊँचाई कितनी हो जाएगी।

(11)





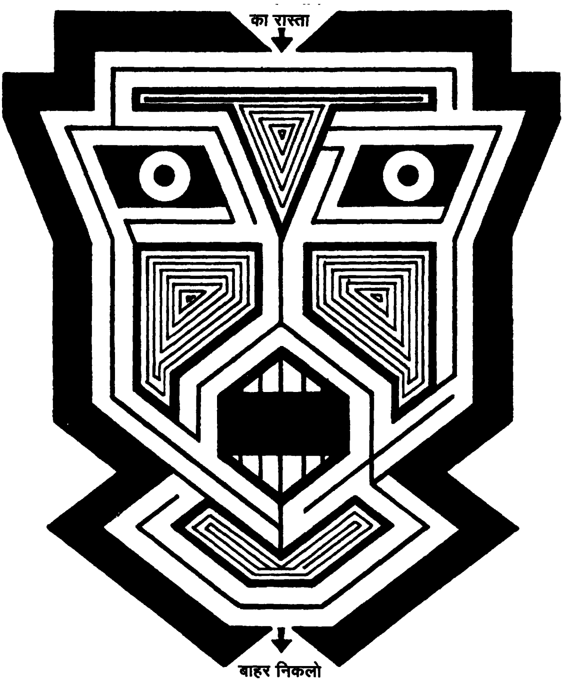
चीनू ने अ, ब, स तरह के कई टुकड़े काटे और उन्हें जोड़कर यह आयताकार आकृति बनाई। अब वह भूल गई कि कौन-से टुकड़े कितने लगाए हैं। तुम गिनकर बता सकते हो?

(12)

बाबन, आनन, कोशिश, करार, तमाम, अलाल। क्या खासियत है इन शब्दों में।

अव्वल तो ये सारे शब्द तीन अक्षरों से मिलकर बने हैं। दूसरे इनमें लगातार दो एक से अक्षर आए हैं। क्या तुम सिर्फ पाँच मिनिट में ऐसे पाँच और शब्द सोच सकते हो?

मुखौटे में घूमो



कैसा लगा यह मुखौटा। पर यह सिर्फ मुखौटा नहीं है। इसमें से गुज़रकर एक तरफ से दूसरी तरफ निकल सकते हो। कोशिश करो।

चकमक
मई-जून, 2001

धारावाहिक : 15 वीं किश्त

प्यारा कुनबा



निकोलाई नोसोव

अब तक तुमने पढ़ा कि मीश्का मुर्गी-पालन नाम की एक किताब लेकर अपने दोस्त कोल्या के साथ इन्क्यूबेटर (मुर्गी के अण्डे सेने वाली मशीन) बनाने की तैयारी करता है। ये गाँव से मुर्गी के ताज़े अण्डे लाते हैं। फिर इन्क्यूबेटर बनाने के लिए सामान की जुगाड़ करते हैं। और फिर शुरुआत होती है मुर्गी के अण्डों को सेने की। इसमें एक बड़ा काम था ताप को एक निश्चित डिग्री पर बनाए रखना। मीश्का और कोल्या बारी-बारी से सोते-जागते हैं और अण्डों की देखभाल करते हैं। एक दिन उन दोनों के साथ पढ़ने वाला कोस्त्या, मीश्का के घर आता है। उसे इन्क्यूबेटर के बारे में पता चल जाता है।

रात-रात भर जागकर इन्क्यूबेटर की देखभाल करने के कारण मीश्का को हर कभी और हर कहीं नींद आ जाती थी। और, जब मीश्का सो रहा होता तो कोल्या उसकी तस्वीर बनाता। इससे मीश्का ने गुस्सा होकर कोल्या से कहा कि अब से इन्क्यूबेटर की देखभाल तुम करो। कुछ दिन कोल्या ने देखभाल की। इसी दौरान एक बार ताप बहुत नीचे चला गया। पर जल्द ही उसने ताप को सही स्थिति में पहुँचा दिया। उसने यह बात किसी को बताई नहीं, पर उसे मन में यह ज़रूर लगता रहा कि अब अण्डों में से चूज़े नहीं निकलेंगे।

इन्क्यूबेटर पर ध्यान देने के कारण दोनों पढ़ाई नहीं कर पा रहे थे। उन्हें कम नम्बर मिलते हैं। उनकी कक्षा के सभी साथी छुट्टी के बाद इन दोनों दोस्तों को रोककर कारण पूछते हैं। तब कोस्त्या सबको बता देता है कि ये लोग इन्क्यूबेटर में लगे हैं। फिर क्या था, सभी मिलकर ताप की निगरानी करने में मदद देने को तैयार हो जाते हैं।

दोस्तों की मदद मिलने से मीश्का और कोल्या को थोड़ी राहत मिलती है। ये पढ़ाई की तरफ भी ध्यान देना शुरू कर देते हैं। और प्रकृति प्रेमी मण्डल का अपना काम भी पूरा कर लेते हैं। आखिर इक्कीसवाँ दिन भी आ जाता है। अण्डों में से चूज़े निकलने का दिन। इस दिन कोल्या और मीश्का की ही बारी थी। पूरा दिन इन्तज़ार में निकल जाता है लेकिन चूज़े नहीं निकलते। मायूस होकर सभी दोस्त चले जाते हैं।

मीश्का और कोल्या अपनी-अपनी गलतियाँ स्वीकार करते हैं। दोनों मान लेते हैं कि उनकी वजह से ही चूज़े नहीं निकले। आखिरकार दुखी होकर दोनों इन्क्यूबेटर के पास बैठ जाते हैं। तभी मीश्का को एक अण्डे में बाल-सा दिखाई पड़ता है। और जैसे ही उन्हें पहले चूज़े की झलक दिखाई देती है, वो तो खुशी के मारे पागल हो जाते हैं। सब यह प्राकृतिक घटना देखने दौड़ पड़ते हैं। अब आगे . . .

हमारी गलती

हम काम में ऐसे लगे कि हमें सवेरा हो जाने का तभी पता चला जब हमने खिड़की में से चमकते हुए सूरज को देखा। सूरज की किरणें रसोई-घर के फर्श पर खेल रही थीं और कमरे को प्रकाशित और सुहावना बना रही थीं।

"तुम देखोगे कि लड़के अभी आते ही होंगे," मीश्का बोला। "उनसे ज़रा भी रुका न जाएगा।" मीश्का के मुँह से शब्द अभी निकले ही थे कि उनमें से दो आ भी गए - जेन्या और कोस्त्या।



"चमत्कार देखना चाहते हो?"
मीश्का चिल्लाया और उसने बर्तन में से नवजात चूज़े को उठाया। "यह रहा प्रकृति का चमत्कार।"

लड़कों ने गंभीरता के साथ चूज़े की जाँच की।

"और तीन और अण्डों में बाल आ गया है," मीश्का ने अभिमान के साथ बताया। "देखो, ये हैं नंबर पाँच, आठ और दस।"

चूज़े को ठण्ड बिल्कुल अच्छी नहीं लग रही थी। जब वह हमारे हाथों में था, वह बेचैनी से कुड़बुड़ा रहा था, लेकिन बर्तन में रखते ही वह तुरन्त शांत हो गया।

"तुमने उसे कुछ खिलाया-पिलाया भी है?" कोस्त्या ने पूछा।

"अरे नहीं," मीश्का बोला। "अभी वह खाने लायक नहीं हुआ। पैदा होने के एक दिन बाद ही उनको खिलाया जाता है।"

"तुम दोनों रात को बिल्कुल नहीं सोए?" जेन्या ने प्रश्न किया।

"नहीं.... हम बहुत व्यस्त थे।"

"तो अब जाकर ज़रा सो जाओ। कुछ देर के लिए हम सम्भाल लेंगे," कोस्त्या ने सुझाव दिया।

"ठीक है। लेकिन वायदा करो कि अगर और कोई चूज़ा हुआ, तो हमें जगा दोगे।"

"निश्चय ही।"

मीश्का और मैं कोच पर लेट गए और तुरन्त सो गए। सच कहूँ, तो मुझे बहुत देर से नींद आ रही थी। लड़कों ने हमें करीब दस बजे जगा दिया। "आओ, और यह चमत्कार नम्बर 2 देख लो!" कोस्त्या ने चिल्लाकर कहा।

"चमत्कार नम्बर कितना?" मैं आधी नींद में बड़बड़ाया। मैंने आँखें खोलकर इधर-उधर देखा, तो रसोई-घर लड़कों से भर गया था।

"वह रहा!" वे चिल्लाए और उन्होंने बर्तन की ओर सकेत किया।

मीश्का और मैं उछलकर बर्तन के पास पहुँचे। उसमें अब दो चूज़े थे। उनमें से एक रोएँदार, गोल-मटोल और अण्डे की जर्दी की तरह पीला था।

"ऐसा सुन्दर!"

"कैसा खूबसूरत है!" मैंने कहा। "लेकिन यह पहलेवाला ऐसा मरियल क्यों नज़र आता है?" लड़के हँस पड़े।

"पहला चूज़ा वह है!"

"कौन-सा?"

"वही जो रोएँदार है।"

"नहीं, नहीं, वह नहीं है। वह तो यह दुबला-पतला है।"

"वह दुबला-पतला तो अभी-अभी पैदा हुआ है। पहला चूज़ा सूख गया है और इसीलिए वह रोएँदार है।"

"है न ज़ोरदार बात!" मैंने कहा। "तब तो दूसरा चूज़ा भी सूखकर ऐसा ही रोएँदार हो जाएगा?"

"बेशक।"

"यह दूसरा चूज़ा कौन-से नम्बर का है?" मीश्का ने पूछा। लड़के उलझन में पड़ गए।

"मेरा ख्याल था कि तुम्हें मालूम है कि सब अण्डों पर नम्बर पड़े हुए हैं," मीश्का बोला।

"नहीं, हमने किसी नम्बर को नहीं देखा," कोस्त्या बोला।

"हम खोल से देख सकते हैं," मैंने कहा। "खोल अभी अंदर ही है।"

मीश्का ने इन्क्यूबेटर में देखा और चीख पड़ा, "देखो, देखो! अंदर और दो एकदम नए चूज़े हैं!"

हर कोई इन्क्यूबेटर की ओर झपटा। मीश्का ने सावधानी से दोनों नए चूज़ों को उठाया और हमें दिखा दिया।

"ये रही असली बाज़ी!" मीश्का ने अभिमान से कहा।

हमने उनको अन्य दो चूज़ों के साथ गरम बर्तन में रख दिया। अब हमारे पास चार चूज़े थे। वे गरमी के लिए एक दूसरे से सटकर बैठे थे। मीश्का ने इनक्यूबेटर मे से टूटे हुए खोल निकाले और नम्बर देखे।

"नम्बर चार, आठ और दस," वह बोला। "लेकिन कौन-सा कौन है?"

सचमुच अब यह नहीं कहा जा सकता था कि वे किस-किस खोल से निकले हैं। लड़के हँसते रहे। "पाँचवाँ अभी भी इन्क्यूबेटर में ही पड़ा है।" मैंने कहा।

"हाँ," मीश्का बोला। "उसे क्या हो गया? मर तो नहीं गया?" हमने पाँचवाँ अण्डा बाहर निकाला और उसका छेद ज़रा खोलकर देखा। बच्चा चुपचाप अन्दर पड़ा हुआ था। उसने अपनी गर्दन हिलाई। "वाह, यह ज़िन्दा है!" हम चिल्लाए और हमने उसको फिर इन्क्यूबेटर में रख दिया।

मीश्का ने शेष अण्डों की भी जाँच-पड़ताल की। तब मालूम हुआ कि नबर तीन में भी बाल आ गया है। लड़कों ने ज़ोरों से तालियाँ बजाईं।

आखिर वातावरण आनन्द से गूँजने लगा। थोड़ी देर बाद माया अन्दर आई। हमने उसे चूज़े दिखलाए।

"यह बच्चा मेरा है!" रोएँदार चूज़े को छीनने की कोशिश करते हुए वह बोली।

"एक मिनट ठहरो," मैंने कहा। "छीनो मत। उसे कुछ देर गरम बर्तन मे रहना चाहिए, नहीं तो उसे ठण्ड लग जाएगी।"

"ठीक है, मैं उसे बाद मे ले लूँगी। लेकिन मैं इस मोटे-ताजे चूज़े को ही लूँगी। मुझे मरियल चूज़ा नहीं चाहिए।"



उस दिन रविवार था। स्कूल न होने के कारण लड़कों ने पूरा दिन हमारे रसोई-घर में ही बिताया। कोई कुर्सी पर, कोई सोफे पर, तो कोई स्टूल पर बैठा था। मीश्का और मैं सम्मान के स्थान पर, इन्क्यूबेटर के पास बैठे थे। दाहिनी तरफ, अंगीठी के पास था गरम बर्तन, जिसमें नवजात चूज़े रखे हुए थे। अंगीठी के ऊपर गरम पानी

का बर्तन था और खिड़की पर थीं पेटियाँ, जिनमें चमकदार हरे रंग की जई उग आई थी। लड़के हँसते, मज़ाक करते और रोचक कहानियाँ सुनाते रहे।

''तुम्हें पता लगा कि जिस दिन इन्हें निकलना चाहिए था, उसी दिन वे क्यों नहीं निकले?'' एक लड़के ने पूछा। ''तुम्हें शुक्रवार के दिन इनके होने की आशा थी।''

''मेरी समझ मे नहीं आता कि ऐसा क्यों हुआ,'' मीश्का ने उत्तर दिया। ''किताब में लिखा हुआ है कि वे इक्कीसवे दिन पैदा होते है और आज तो तेईसवाँ दिन है। हो सकता है कि किताब मे गलत लिखा हो।''

''अगर किसी ने गलती की है, तो तुमने ही,'' ल्योशा बोला। ''तुमने इन्क्यूबेटर में अण्डे कब रखे थे?''

''तीसरी तारीख को। उस दिन शनिवार था। मुझे अच्छी तरह से याद है, क्योंकि अगले दिन रविवार था।''

''सुनो,'' जेन्या स्कवोर्त्सोव बोला। ''कहीं पर कुछ गलती ज़रूर है। तुमने शनिवार के दिन अण्डों को अन्दर रखा और इक्कीसवाँ दिन शुक्रवार को हुआ।''

''वह ठीक कहता है,'' वीत्या स्मिर्नोव ने कहा। ''अगर तुमने शनिवार को शुरू किया, तो इक्कीसवाँ दिन शनिवार को ही आना चाहिए। सप्ताह में सात दिन होते हैं और इक्कीस दिन का अर्थ है ठीक तीन सप्ताह।''

''सात तिया इक्कीस!'' सेन्या बोब्रोव ने हँसते हुए कहा। ''कम से कम पहाडों में तो यही है।''

''पहाड़ों मे क्या है मै नहीं जानता, लेकिन हमने तो यही हिसाब लगाया था,'' मीश्का क्रोध से बोला।

''तुमने कैसे गिना था?''

''मै बताता हूँ,'' मीश्का बोला और अपनी उँगलियों पर गिनने लगा। ''तीसरी तारीख को पहला दिन था, चौथी तारीख को दूसरा, पाँचवीं तारीख को तीसरा....''

उसने इसी तरह गिना और इक्कीसवाँ दिन शुक्रवार को आया।

सेन्या भी उलझन मे पड गया। ''यह तो विचित्र बात है। पहाड़ों के हिसाब से इक्कीसवाँ दिन शनिवार को होता है। और जब तुम उँगलियों पर गिनते हो, तो वह शुक्रवार को आता है।''

''फिर से दिखाओ कि तुमने कैसे गिना,'' जेन्या ने कहा।

''देखो,'' मीश्का ने फिर से उँगलियों को मोड़ते हुए कहा। ''शनिवार - तीसरी तारीख को पहला दिन, रविवार - चौथी तारीख को दूसरा दिन....''

''एक मिनट! तुम गलती कर रहे हो! अगर तुमने तीसरी तारीख को शुरू किया था, तो तुम्हें वह दिन नहीं गिनना चाहिए।''

''क्यों?''

''कारण कि वह दिन पूरा नहीं हुआ था। चौथी तारीख को वह पूरा हो गया। इसका मतलब है कि हमे चौथी तारीख से ही गिनना चाहिए।''

यकायक मीश्का और मै पलक झपकते इसे समझ गए। मीश्का ने नए तरीके से गिनना शुरू किया और अब ठीक उत्तर निकाला।

''बेशक,'' वह बोला। ''इक्कीसवाँ दिन कल ही था।''

''तब तो हर बात ठीक ही तरह से हुई,'' मैंने कहा। ''हमने शनिवार की शाम को इन्क्यूबेटर मे अण्डे रखे थे और पहला बाल शनिवार की शाम को ही नज़र आया। ठीक इक्कीसवें दिन के बाद।''

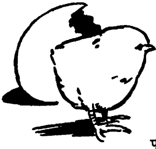
''देखा, ठीक से गिनने पर कितनी परेशानी से बचा जा सकता है,'' वान्या लोज्किन ने कहा। सब हँस पड़े।

''ठीक बात है,'' मीश्का बोला। ''अगर हमने यह गलती न की होती, तो हम काफी तकलीफ और परेशानी से बच जाते।''

जन्मदिन

उस दिन के ढलने तक गरम बर्तन मे दस चूज़े बैठे हुए थे। आखिरी चूज़ा नम्बर 5 ही था। वह किसी भी प्रकार अपने खोल से बाहर आने को तैयार न था और उसे बाहर आने में मदद देने के लिए हमने आखिर अण्डे का सिरा तोड़ दिया। अगर हमने ऐसा न किया होता, तो वह अब भी वहीं बैठा रहता। दूसरे चूज़ों की तुलना में वह छोटा और दुबला था, शायद इसलिए कि वह खोल में इतनी ज्यादा देर तक रहा था।

शाम तक इन्क्यूबेटर में केवल दो अण्डे बाकी रह गए। वहाँ अकेले पड़े-पड़े वे बहुत उदास दिखाई दे रहे थे और उन पर अभी भी बाल का कोई निशान नहीं था।



हमने इन्क्यूबेटर में लैंप जलता रहने दिया, लेकिन उस रात भी वे नहीं फूटे। नवजात चूज़ों ने गरम बर्तन में रात बड़े आराम से काटी और सबेरे हमने उनको नीचे फर्श पर रख दिया।

दस पीले रोएँदार गोले अपनी शक्ति भर चीं-चीं कर रहे थे। वे अपनी छोटी-सी आँखें मिचमिचाते थे और तेज़ रोशनी से मुँह फेर लेते थे। कुछ अपने छोटे-से पैरों पर अच्छी तरह खड़े थे, तो कुछ अब भी लड़खड़ा रहे थे। कुछ तो दौड़ने की भी कोशिश करते थे, लेकिन इसमें वे उस्ताद नहीं थे। कभी-कभी वे फर्श पर छोटे-छोटे धब्बों पर तथा फर्श की पट्टियों की कीलों के चमकीले सिरों तक पर अपनी नन्हीं चोंचों से ठोंग मारते थे।

''देखो, देखो, भूखों मरे जा रहे है'' मीश्का चिल्लाया। हमने जल्दी से एक अण्डा उबाला, उसके छोटे-छोटे टुकड़े किए और उसको ज़मीन पर बिखेर दिया। लेकिन चूज़े नहीं जानते थे कि उसके साथ क्या करें। हमने उन्हें अपने हाथों से खिलाने की कोशिश की।

''खाओ भी पगले, खाओ,'' हमने कहा। लेकिन चूज़ों ने उसकी ओर आँख उठाकर भी नहीं देखा। इसी समय मीश्का की माँ रसोई-घर में आईं।

''माँ, ये अण्डा तो खाते ही नहीं,'' मीश्का ने कहा।

''तुम उन्हें सिखाओ।''

''कैसे? हमने उनसे खाने को कहा, लेकिन वे हमारी बात सुनते ही नहीं।''

''चूज़ों को ऐसे नहीं सिखाया जाता। इसके लिए तुम्हें अपनी उँगली से फर्श को ठुकठुकाना चाहिए।''

मीश्का चूज़ों के पास बैठ गया और उसने अण्डे के चूरे के पास फर्श को ठुकठुकाया। चूज़ों ने खाने की तरफ ठोंग मारती उँगली को ध्यान से देखा और फिर वे उसकी नकल करने लगे। कुछ ही मिनटों में उन्होंने सारा ही अण्डा चट कर दिया। फिर हमने एक तश्तरी में पानी रख दिया और उन्होंने वह पी लिया। अब की उन्हें सिखाने की हमें जरूरत नहीं पड़ी। फिर वे एक जगह इकट्ठा हो गए और हमने उनको गर्मी देने के लिए बर्तन में रख दिया।

उस दिन जब मारीया पेत्रोव्ना क्लास में आई, तब हम सब उन्हें यह खबर देने के लिए दौड़े कि हमारे चूज़े निकल आए हैं। वह बहुत हैरान और खुश हुई।

''तो, आज तुम्हारे चूज़ों का जन्मदिन है,'' वह बोलीं। ''बधाइयाँ!''

हम सब हँस पड़े और वीत्या स्मिर्नोव ने कहा,''हमें उनके जन्म की खुशी में पार्टी देनी चाहिए। आज ही हो जाए।'' यह विचार सभी को बहुत पसन्द आया।

''हाँ, हाँ, पार्टी होनी ही चाहिए। मारीया पेत्रोव्ना, आप हमारे चूज़ों के जन्मदिन की पार्टी में आएँगी, न?''

''धन्यवाद लड़को, मैं बहुत खुशी के साथ आऊँगी,'' मारीया पेत्रोव्ना ने हँसते हुए कहा। ''मैं उनके लिए उपहार ले आऊँगी।''

''हम सब को उनके लिए उपहार लाने चाहिए!'' लड़कों ने एक साथ चिल्लाकर कहा।

स्कूल से घर आने पर मीश्का और मैं अधीरता से मेहमानों की राह देखने लगे। हम यह देखने को व्याकुल थे कि चूज़ों को किस तरह के उपहार मिलेंगे। पहले-पहल सेन्या बोब्रोव एक गुलदस्ता लेकर आया।

''यह किसलिए?'' मीश्का ने पूछा।

''चूज़ों के लिए। यह मेरी ओर से उपहार।''

''चूज़ों के लिए फूल! वे फूल नहीं खा सकते न, या खा सकते हैं?''

''उनके लिए इनको खाना ज़रूरी नहीं है। वे इनको देखेंगे और सूँघेंगे।''

''भई वाह, कैसी सूझ है! मानो उन्होंने पहले कभी फूल देखे ही नहीं।''

''बेशक नहीं देखे। इन्हें रखने के लिए मुझे एक गुलदान दो। तुम देखोगे कि ये कितने सुन्दर लगते है।''

हमने एक गुलदान में पानी डालकर उसमें फूल रख दिए। इसके बाद सेर्योजा और वादिक आए। वे दोनों स्नोड्राप फूल के गुच्छे लाए थे। ''हर कोई फूल ही किसलिए ला रहा है?'' मीश्का ने भौंहें चढाकर पूछा।

''क्या हमारे उपहार तुम्हें पसन्द नहीं हैं?'' वादिक ने बुरा मानकर कहा। ''उपहार की इस प्रकार नुक्ताचीनी करना अच्छा नहीं होता।''

हमने उनके फूल भी पानी में रख दिए। फिर वान्या लोज्किन आधा किलोग्राम जई का आटा लेकर आया। मीश्का शंकित-सा दिखाई देने लगा, ''चूज़े शायद इसे न खाएँ।''

''हम कोशिश तो कर ही सकते हैं,'' वान्या बोला।

''नहीं, पहले मारीया पेत्रोव्ना से पूछना ज्यादा ठीक रहेगा।''

इसी समय मारीया पेत्रोव्ना आईं। वह समाचारपत्र में लपेटी हुई कुछ चीज लाई थीं। खोलकर देखा, तो उसमें दूध जैसी किसी चीज से भरी हुई बोतल थी।

''दूध!'' मीश्का बोल उठा।''उनको दूध पिलाने की बात हमने कभी सोची ही नहीं थी!''

''यह दही है,'' मारीया पेत्रोव्ना बोलीं।''पहले कुछ दिनों के लिए उन्हें इसी की जरूरत है। तुम देखो कि वे इसको कितना पसन्द करते हैं।''

हमने चूज़ों को बर्तन से बाहर निकाला और तश्तरी में दही उड़ेल दिया। उन्होंने उसे बड़े चाव से पी लिया।

''यह है चूज़ों को असली उपहार!'' मीश्का ने खुश होकर कहा।''हमें पता होना चाहिए कि चूज़ों के जन्मदिन की पार्टी में क्या ले जाना चाहिए।''

एक के बाद एक मेहमान आते रहे। वीत्या और जेन्या बाजरा लाए। इतने में ल्योशा कूरोच्किन चूज़ों के लिए एक झुनझुना लेकर दौडता हुआ आया।

''मेरी समझ में नहीं आ रहा था कि क्या लाऊँ। रास्ते में एक दूकान में मुझे ये झुनझुने नजर आए, सो मै एक खरीद लाया।''

''क्या शानदार विचार है!''मीश्का ने व्यंग्य के साथ कहा। ''चूज़ों के जन्मदिन के लिए एकदम सही भेंट!''

''मुझे क्या पता था कि क्या लाना चाहिए? और हो सकता है कि चूज़े इसे पसन्द ही करें।''

वह चूज़ों के पास लपक गया और उनके ऊपर झुनझुना बजाने लगा। उन्होंने दही पीना छोड दिया और ऊपर देखने लगे।

''देखा!'' ल्योशा खुशी के मारे चिल्ला पडा। ''उनको यह अच्छा लग रहा है!'' सब लोग हँस पड़े।

''ठीक है,'' मीश्का बोला।''अब उन्हें आराम से खाने दो''

मैंने मारीया पेत्रोव्ना से पूछा कि क्या हम चूज़ों को जई का आटा खिला सकते हैं। उन्होंने कहा कि वे किसी भी तरह का आटा खा सकते हैं, बशर्ते कि वह पका हुआ हो।''आटे को कैसे पकाते हैं?'' मीश्का ने जानना चाहा।

''उसी तरह, जिस तरह हम दलिया पकाते हैं,'' मारीया पेत्रोव्ना ने कहा।

मीश्का और मैं उसी समय दलिया पकाना चाहते थे, लेकिन इतने में एक और मेहमान आ गया - कोस्त्या देव्याकिन।

''क्या तुम भी उपहार लाए हो?'' लडकों ने पूछ लिया।

''हाँ, हाँ,'' कोस्त्या ने उत्तर दिया और जेब मे से दो कचौड़ियाँ निकालीं।

''कैसा मजेदार उपहार है!'' लडके हँसने लगे।

''जन्मदिन की पार्टियों मे हमेशा ही कचौडियाँ मिलती है, या नहीं?'' कोस्त्या बोला।

''इनमें क्या भरा हुआ है?''मीश्का ने संदेह से पूछा।

''चावल।''

''चावल?'' मीश्का चिल्लाया।



उसने कोस्त्या के हाथ से कचौड़ियाँ छीन लीं और उनमें से चावल निकालने लगा।

"ऐ, क्या कर रहे हो!" कोस्त्या बोला। "क्या तुम्हें मेरे ऊपर भरोसा नहीं है?"

लेकिन मीश्का ने जवाब नहीं दिया। उसने चावल एक तश्तरी में डाले और चूज़ों के सामने रख दिए। उन्होंने उस पर सीधे चोंचें चलाना शुरू कर दिया।

जब माया ने देखा कि हर कोई चूज़ों के लिए उपहार लाया है, तो वह अपने कमरे मे गई और एक लाल फीता ले आई। उसने उसके छोटे-छोटे टुकड़े किए और फिर हर चूज़े के गले में एक-एक लाल फीता बाँध दिया। हमने फूलों के गुलदान ज़मीन पर चूज़ों के नजदीक रख दिए और उन फूलों, लाल फीतों और दही, चावल तथा ताज़े पानी की तश्तरियों को देखकर हमें सचमुच ही किसी जन्मदिन जैसा लगने लगा। कोस्त्या चूज़ों को घास खिलाना चाहता था, लेकिन मारीया पेत्रोव्ना ने कहा कि इतनी जल्दी उनको घास खिलाना ठीक नहीं है। हाँ, कल खिला सकते हैं।

चूज़ों के काफी खाने-पीने के बाद हमने उनके फीते निकाल लिए और फिर उनको गरम बर्तन में रख दिया। मारीया पेत्रोव्ना ने रसोई-घर के एक हिस्से मे बाड़ा लगा देने की सलाह दी और उन्हें ठण्ड से बचाने के लिए गरम पानी का एक बर्तन रखने के लिए कहा।

"सब से अच्छी बात तो यह होगी कि इनको देहात ले जाया जाए। यहाँ घर मे बन्द रहने से वे बीमार पड सकते हैं और मर सकते हैं। उनको ताज़ा हवा मिलनी चाहिए," मारीया पेत्रोव्ना बोलीं।

हमने उनको इन्क्यूबेटर और उसमे पड़े दोनों अण्डे दिखाए। "मुझे डर है कि इनमें से अब चूज़े निकलेंगे ही नहीं," मारीया पेत्रोव्ना ने कहा। "लेकिन कोई बात नहीं। जो कुछ तुमने किया है, वही बहुत अच्छा है।"

"यह सब इसीलिए कि इन सब लडकों ने इसमें हाथ बँटाया और हमारी मदद की," मीश्का बोला। "अकेले हम दोनों यह नहीं कर पाते।"

"मुझे तो डर था कि कुछ भी हाथ नहीं आएगा, क्योंकि एक बार मैं सो गया था और ताप नीचे चला गया था," मैंने कहा।



"ये थोड़े ठण्डे भी हो जाएँ, तो भी कुछ नहीं बिगडता," मारीया पेत्रोव्ना बोलीं। "भला मुर्गी अपने अण्डों पर सारा समय थोड़े ही बैठती है। दिन में एकाध दफा वह अण्डों को वैसे ही छोडकर कुछ चारा-दाना लेने चली जाती है, जिससे भ्रूण के विकास के लिए कुदरती हालत बनी रहे। लेकिन हाँ, उनको ज़्यादा गरमी पहुँचाना खतरनाक है।"

"मेरी भूल से एक बार उन्हे ज़्यादा गरमी पहुँच गई थी," मीश्का बोला। "ताप 40 डिग्री तक चला गया था।"

"बहुत ज़्यादा नुकसान होने के पहले ही तुम्हारा ध्यान उस पर चला गया होगा," मारीया पेत्रोव्ना ने कहा। "लेकिन अगर तुमने ताप बहुत समय तक ज़्यादा रहने दिया होता, तो अण्डे सचमुच खराब हो जाते।"

उस शाम को हमने शेष दो अण्डों को तोडकर देखा। दोनों मे भ्रूण अविकसित रूप मे था। जीवन समाप्त हो गया था। और चूज़े पैदा होने के पहले ही चल बसे थे। शायद यह ज़्यादा गरमी पहुँचने का ही परिणाम था।

हमने लैंप बुझा दिया, पूरे तेईस दिन तक वह बराबर जलता रहा था। तापमापी में पारा धीरे-धीरे नीचे गिर गया। इन्क्यूबेटर ठण्डा हो गया। लेकिन अँगीठी के नज़दीक बर्तन में हमारा "**प्यारा कुनबा**" था - दस रोएँदार पीले चूज़े।

(अगले अंक में जारी)

सभी चित्र : सौरभ दास



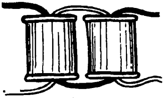
इल्ली की चाल

तुमने अक्सर पौधों पर या सब्ज़ियों में इल्लियाँ देखी होंगी। मोटी-पतली, छोटी-बड़ी, और कई रंगों की इल्लियाँ होती हैं। तुम इन इल्लियों के मॉडल बनाकर यह देख सकते हो कि वो किस तरह चलती हैं। और खिलौना तो बन ही जाएगा।

इल्लियाँ बनाने के लिए अलग-अलग तरह की सामग्री का उपयोग कर सकते हो। जैसे बड़े मोती या धागे की रील या कॉर्क के टुकड़े लेकर इल्ली के शरीर के खण्ड बना सकते हो। इनको पिरोने के लिए सूती धागा या ऊन या स्ट्रॉ ले सकते हो। इल्ली का शरीर बनाने के लिए और उसे पिरोने के लिए जो सामग्री का इस्तेमाल कर रहे हो उसके अनुसार इल्ली की चाल दिखाई देगी।

तो चलो हम यहाँ धागे की खाली रील और मोटा धागा या ऊन से इल्ली बनाने की कोशिश करते हैं। इल्ली के पैर बनाने के लिए तार के टुकड़े लगाएँगे।

सबसे पहले धागे की रीलें इकट्ठी कर लो। फिर मोटे धागे के दो बराबर टुकड़े लेकर, रीलों को चित्र-1 की तरह पिरो लो। एक धागे को एक तरफ रखना दूसरे को दूसरी तरफ। जितनी खाली रील होंगी इल्ली उतनी ही लम्बी बनेगी।

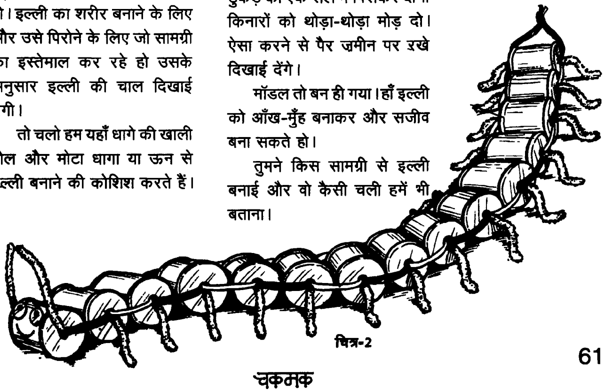


चित्र-1

जब सारी रीलें आपस में जुड़ जाएँ तब तार के बराबर लम्बाई के उतने ही टुकड़े लो जितनी रीलों को जोड़ा है। पैर बनाने के लिए एक टुकड़े को एक रील में पिरोकर दोनों किनारों को थोड़ा-थोड़ा मोड़ दो। ऐसा करने से पैर ज़मीन पर रखे दिखाई देंगे।

मॉडल तो बन ही गया। हाँ इल्ली को आँख-मुँह बनाकर और सजीव बना सकते हो।

तुमने किस सामग्री से इल्ली बनाई और वो कैसी चली हमें भी बताना।



चित्र-2

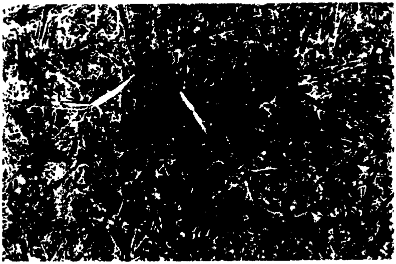
सूक्ष्मदर्शी से . . .

कागज़

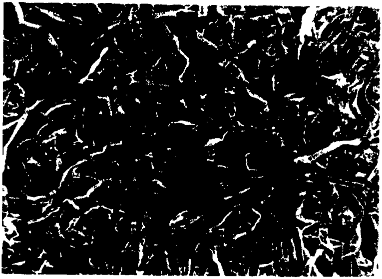
कागज आमतौर पर लकड़ी (या बाँस) से निकाले गए सेल्युलोज के रेशों से बना होता है। आजकल कुछ खास तरह के कागज पटसन, पुराने कपडे की चिंदियाँ आदि से भी बनाया जाता है।
कागज निर्माण की प्रक्रिया में लकड़ी की छीलन (या साफ चिदियाँ या पटसन की डंगालों) को पानी में रखकर खूब कूटा-पीटा जाता है ताकि उसकी लुगदी बन जाए। इस तरल लुगदी को फिर साफ करने के लिए इसमे रसायन मिलाए जाते हैं। फिर इसे सफेद (ब्लीच) किया जाता है और एक बुनी हुई छन्नी मे से छाना जाता है। अन्त मे रेशों के इस गीले जाल को रोलर पर चलाकर, दबाकर सुखा लिया जाता है।
कागज किस तरह का, किस गुणवत्ता का बनेगा, यह इस बात पर निर्भर करता है कि उसकी मोटाई और घनत्व कितना है तथा उसके लिए रेशे किन स्रोतों से लिए गए थे। यहाँ चित्रों में अलग-अलग प्रकार के कागज दिखाए गए है।



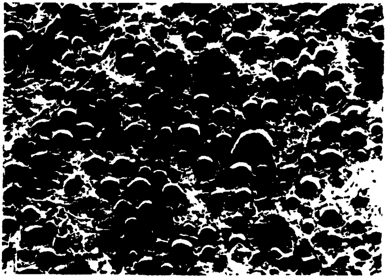
1. यह रेगमाल कागज़ का 50 गुना बड़ा किया गया चित्र है। मज़ेदार बात यह है कि इस चित्र में कागज़ तो दिखाई ही नहीं दे रहा है। बल्कि उस पर लगे काँच का बारीक चूरा ही नज़र आ रहा है।



2. यह अखबारी कागज़ का नमूना है। इसे 60 गुना बड़ा करके दिखाया गया है।



3. टिशु पेपर (होटलों आदि में मिलने वाले पेपर नैपकिन) का यह नमूना भी 50 गुना बड़ा करके दिखाया गया है। इस तरह के कागज़ में रेशों के बीच में काफी खाली जगह रहती है। यह पानी, पसीना आदि पोंछने के काम में लिया जाता है क्योंकि यह काफी सोख्ता होता है।



4. यहाँ स्टीकर के पीछे लगे गोंद वाले कागज़ का चित्र 70 गुना बड़ा करके दिखाया गया है। चित्र में दिख रहे गोले गोंद के गोले हैं जिन पर रेज़िन की एक परत चढ़ी हुई है। स्टीकर को चिपकाने के लिए दबाने पर कुछ गोलों के ऊपर की परत फट जाती है और गोंद फैल जाती है।

चित्र सौजन्य ''अण्डर द मायक्रोस्कोप''

तुम्हारी राय

तुम अखबार तो पढ़ते हो न, ट्रांज़िस्टर या टेलीविज़न पर भी कभी खबरें सुन लेते होगे। चलो हम मान लेते हैं कि तुम आजकल हो रही घटनाओं की खबर रखते हो। अब असली बात, तुम्हें जानकारी होगी कि अभी कुछ राज्यों में चुनाव हुए हैं। वैसे भी चुनाव होते ही रहते हैं। तुम्हारे गाँव, शहर में भी तुमने चुनाव होते देखा होगा। पंचायत चुनाव, नगर पालिका, लोक सभा के चुनाव . . . .।

तुम जानते हो चुनाव क्यों होते हैं, सरकार बनाने के लिए। पर सरकारें क्यों बनाई जाती हैं? तुम इस बारे में क्या सोचते हो? कैसी सरकार होनी चाहिए? तुम कभी इनके बारे में अपने घर या स्कूल में बात करते हो? अब तक न की हो तो इस विषय पर बातचीत करना। और फिर इन सवालों पर तुम्हारी अपनी राय हमें लिखकर भेजना 15 अगस्त तक। भेजोगे न!

ता ता थैया

सुबह-सबेरे
मेरी खिड़की
पर आ बैठी
एक चिरैया

ता ता थैया
चीं-चीं- चिक्- चिक्
चहक-चहककर
बोली, ''जागो!
बुद्धू भैया।''

ता ता थैया
आँखें मलकर
ले अँगड़ाई
हम उठ बैठे
फेंक रजैया

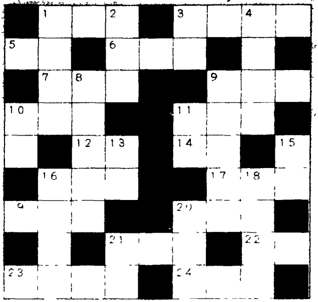
ता ता थैया
हमने पूछा, ''नाम?''
शरम से
उड़कर बोली,
''मैं गौरेय्या।''

● सुरेश स्वप्निल



● चित्र : दुर्गाबाई

वर्ग पहेली - 118



संकेत : बाएँ से दाएँ

1. जिसका कोई अन्त न हो (3)
3. पकवान बनाने वाले (4)
5. यह पानी की भी होती है और तलवार या छुरी की भी (2)
6. पावती (3)
7. हरे को काट लाल मिलाया तो भी मरा (3)
9. थकाना या छकाना (3)
10. सेतु पर, ताश का वह पत्ता जो सबसे कीमती हो (3)
11. स्वास्थ्य (3)
12. सिलाई का वह तरीका जिससे कपडे के छेद वगैरह भरे जाते है (2)
14. पानी (2)
16. बस बवाल में ब अतिरिक्त स हो तो प्रश्न ही क्या है? (3)
17. सवा मन गेहूँ पंडित के नाम (3)
19. स रे ग म प ध नि स के चढते हुए स्वर (3)
20. आग (3)
21. बुरे रीति-रिवाज (3)
22. कर से करते हैं काम (2)
23. गोख और शर में है एक चौपाया जीव (4)
24. इकाई, दहाई, सैकड़ा,......... (3)

संकेत : ऊपर से नीचे

1. एक दलहन फसल (4)
2. जलतरग में द्रव है (3)
3. सीमा (2)
4. घटना है तर के दावा मे (4)
8. वाह पर लाल मे ढूँढो वह जिसे कोई फिक्र या सरोकार नहीं (5)
9. बचपन में हलवा खाया तो ताकतवर बने (5)
10. एक राशि भी और वजन करने का यत्र भी (2)
11. एक खास बिस्तर (2)
13. कली से बनता है .. . ... (2)
15. खनिज पदार्थों का भण्डार (2)
16. तालाब (4)
18. एक राग जिसे मलो तो हार बने (4)
20. जिसके तल का कोई पता न हो (3)
21. लव का भाई और एक प्रकार की घास (2)

[illegible] कुशवाह, हिरणखेड़ा, होशंगाबाद, म.प्र. द्वारा भेजी गई वर्ग पहेली पर आधारित

वर्ग पहेली – 118 का हल चकमक के अगस्त, 2001 अंक में छपेगा। हल भेजने के लिए वर्ग पहेली की जाली को चकमक से न काटें। [illegible] शब्द लिखकर भेज दें।

सर्वशुद्ध हल भेजने वालों को चकमक का अगस्त 2001 का अंक उपहार में भेजा जाएगा।

बलिदान दिवस

जिला पानीपत हरियाणा के गाँव डिकाडला मे 22 मार्च, 2001 की रात शहीद भगतसिह, राजगुरू , सुखदेव के 70 वे बलिदान दिवस का सास्कृतिक कार्यक्रम देखने मै अपने छोटे भाई अमन के साथ गई। इसका आयोजन नौजवान भारत सभा व छात्र सगठन पी डी एस यू ने किया था। इस प्रोग्राम मे दिल्ली से निशात नाट्य मच की टीम 'साम्राज्यवाद विरोधी अभियान' यात्रा करते हुए पहुँची।

सबसे पहले गॉव डिकाडला के बुजर्ग किसानो, मजदूरो व नौजवान भारत सभा – पी डी एस यू के लडको ने शहीद भगतसिह, राजगुरू, सुखदेव, अशफाक उल्ला खॉ, चन्द्रशेखर आजाद, रामप्रसाद बिस्मिल, बीबी गुलाब कौर की तस्वीरो पर फूल चढाए। भगतसिह का नारा – इकलाब जिदाबाद व साम्राज्यवाद मुर्दाबाद – के नारे लगाए। निशात टीम के सयोजक ने बताया कि शहीद भगतसिह व उनके दोनो साथियो को 22 मार्च की रात को ब्रिटिश साम्राज्यवादियों ने फाँसी पर लटका दिया था।

फिर निशांत ने नुक्कड नाटक ''तमाशा'' दिखाया। इसमे सरकारी दफ्तरो, अस्पतालो, पुलिस थानो वगैरह में फैली रिश्वतखोरी व आम जनता की बुरी हालत को दिखाया गया। फिर नुक्कड नाटक 'काले अग्रेजों भारत छोडो'' पेश किया गया। इसमे एक कलाकार ने साम्राज्यवादी अमरीका के झण्डे की वर्दी पहनी थी। इस नाटक मे दिखाया गया कि किस तरह से आज विदेशी कम्पनियो को हमारे देश के नेता हमारी भारत मॉ को लूटने की छूट दे रहे है। जिससे किसानो, मजदूरो की हालत खराब हो गई है। शहीद भगतसिह का प्रिय गीत मेरा रग दे बसन्ती चोला व अन्य जनगीत भी सुनाए गए।

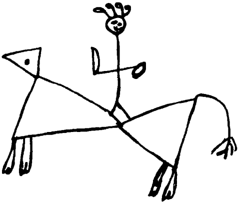
कार्यक्रम देर रात तक चलता रहा। इसे सभी गॉववासियों ने देखा। सभी बहुत खुश थे। गॉव मे हमारे स्कूल के कई बच्चे भी इस प्रोग्राम को देखने गए थे। इस कार्यक्रम से हमे देश भक्ति की बडी प्रेरणा व खुशी मिली। ऐसे प्रोग्राम सभी जगह होने चाहिए।

● एकता, छठवीं, पानीपत, हरियाणा



एक अवलोकन

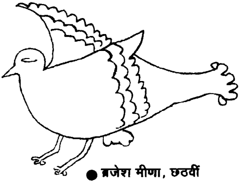
भोपाल के पास खरवई नाम की जगह है। इस इलाके में फैली पहाडियों पर बहुत प्राचीन शैल चित्र पाए गए हैं। भोपाल का एक समूह इनटैक 'भारतीय राष्ट्रीय कला एवं सांस्कृतिक निधि न्यास' ने 27 मार्च, 2001 को इन चित्रों के अवलोकन का एक कार्यक्रम आयोजित किया था। इसमें खरवई के स्कूली बच्चों ने भाग लिया। अवलोकन के बाद बच्चों ने अपने अनुभव लिखे और चित्र भी बनाए।



● अमित कुमार सोनी, छठवीं

हम सुबह उठे। हमने जाने की तैयारी की। हमने वहॉ जाकर चट्टानो पर मढे चित्रो को देखा। देखने के बाद हमने पेटिंग की। हमे वहॉ पर बहुत आनद आया।

● शफिउर्रहमान, सातवीं



● ब्रजेश मीणा, छठवीं

दस बजे हम गाडी मे बैठकर चिडिया टोल के ऊपर एक चट्टान पर बने चित्रो को देखने गए। ये चित्र आदि मानव ने बनाए थे। दीदी ने आदि मानव और चित्रो के बारे मे बाते बताईं।

● विष्णुप्रसाद, आठवीं

आज हम गुफा मे गए। वहॉ हमने चित्र देखे। हमने भी कागज पर चित्र बनाए। फिर टीचर ने बताया कि ये चित्र आदि मानव ने बनाए है। ये चित्र लाल रग के पत्थर से बनाए गए है। फिर हम वापस स्कूल आए और फिर से चित्र बनाए।

● सुजाता शर्मा, सातवीं

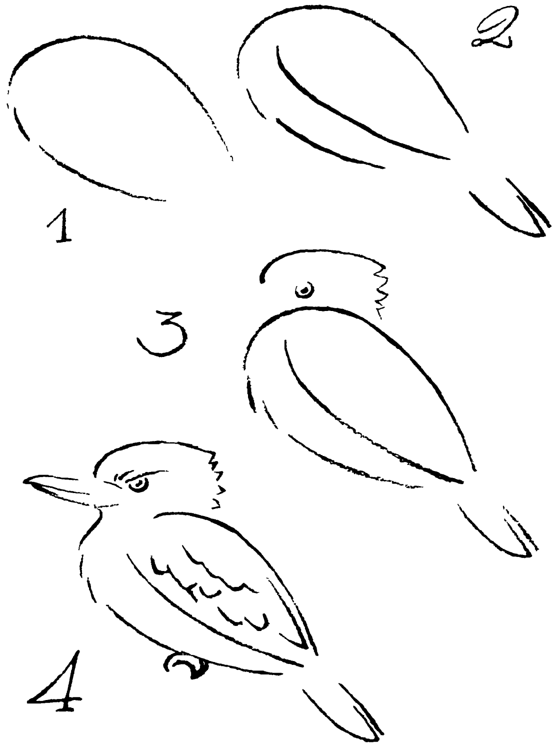


● ब्रजेश मीणा, छठवीं



● नीलम शर्मा, सातवीं

चित्र बनाओ, रंग भरो





● ज्योति केन, नौवीं, गौतमपुरा, इन्दौर, म.प्र.



● पलाश, दूसरी, नोयडा, उत्तरप्रदेश

रेक्स डी रोज़ारियो की ओर से विनोद रायना द्वारा राजकमल ऑफसेट प्रिन्टर्स से मुद्रित एवं एकलव्य, ई-7/एच.आई.जी 453, अरेरा कॉलोनी, भोपाल-462016 से प्रकाशित।

संपादक विनोद रायना

12512